व्याकरण तरु

हिंदी व्याकरण

९ कोर्स 'B'

उत्तर पुस्तिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

01 अपठित गद्यांश
(Unseen Prose Passages)

(अभ्यास-उत्तर)

15. (क) (i) (ख) (ii)
(ग) (iii) (घ) (i)
(ङ) (iv)

16. (क) (ii) (ख) (iv)
(ग) (iii) (घ) (iv)
(ङ) (ii)

17. (क) (i) (ख) (iv)
(ग) (i) (घ) (iv)
(ङ) (iii)

18. (क) (iv) (ख) (ii)
(ग) (iii) (घ) (i)
(ङ) (iii)

19. (क) (iv) (ख) (iii)
(ग) (i) (घ) (i)
(ङ) (i)

20. (क) (ii) (ख) (i)
(ग) (iii) (घ) (iv)
(ङ) (iii)

21. (क) (iii) (ख) (iv)
(ग) (iii) (घ) (iv)
(ङ) (iii)

22. (क) (i) (ख) (iii)
(ग) (ii) (घ) (ii)
(ङ) (iii)

23. (क) (ii) (ख) (iii)
(ग) (ii) (घ) (ii)
(ङ) (iii)

24. (क) (iii) (ख) (iv)
(ग) (ii) (घ) (iv)
(ङ) (i)

25. (क) (i) (ख) (iii)
(ग) (ii) (घ) (iii)
(ङ) (i)

26. (क) (ii) (ख) (i)
(ग) (iv) (घ) (iv)
(ङ) (iv)

27. (क) (ii) (ख) (i)
(ग) (iv) (घ) (i)
(ङ) (ii)

28. (क) (iv) (ख) (iii)
(ग) (i) (घ) (ii)
(ङ) (iii)

29. (क) (ii) (ख) (ii)
(ग) (ii) (घ) (ii)
(ङ) (i)

30. (क) (iv) (ख) (ii)
(ग) (iii) (घ) (iv)
(ङ) (ii)

31. (क) (iv) (ख) (i)
(ग) (iii) (घ) (i)
(ङ) (ii)

32. (क) (iii) (ख) (i)
(ग) (ii) (घ) (i)
(ङ) (iv)

33. (क) (i) (ख) (iv)
(ग) (iv) (घ) (ii)
(ङ) (ii)

34. (क) (iii) (ख) (ii)
(ग) (i) (घ) (iii)
(ङ) (iv)

01 शब्द और पद

1. कोई शब्द जब व्याकरण के नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है, तब वह 'पद' बन जाता है।

उदाहरण– 'राम', 'रोगी' 'फल' 'देना'– ये चारों शब्द हैं। इनसे बना वाक्य है–

राम ने रोगी को फल दिया।

वाक्य का अंग बन जाने के कारण 'राम', 'रोगी', 'फल', 'देना' शब्द न रहकर पद बन गए हैं।

2. शब्द और पद में निम्नलिखित अंतर है–

वर्णों का सार्थक एवं व्यवस्थित मेल 'शब्द' कहलाता है

जैसे– ब् + अ + क् + अ + र् + ई = बकरी

प् + औ + ध् + आ = पौधा

च् + अ + र् + अ + न् + आ = चरना

शब्द स्वतंत्र रूप से शब्दकोश में होते हैं।

'शब्द' जब व्याकरण के नियमों में बँधकर वाक्य का अंग बन जाते हैं, तब उन्हें 'पद' कहा जाता है जैसे– बकरी ने पौधे को चर लिया।

वाक्य में प्रयुक्त होने से 'बकरी', 'पौधा' और 'चरना' अब शब्द न रहकर पद बन गए हैं।

3. 'राम' शब्द रूप में–

र् + आ + म् + अ = राम

'राम' पद रूप में– राम ने पत्र लिखा।

राम के लिए खिलौने लाना।

अब राम की बारी है।

इन वाक्यों में **'राम'** पद है।

4. सुंदर लड़की।

5. (क) शब्द जब तक कोश में रहते हैं, 'शब्द' कहलाते हैं।

(ख) मैं, किसे।

(ग) देर रात तक।

(घ) (i) शब्द वर्णों के सार्थक मेल से बनते हैं।

(ii) शब्दों से ही वाक्यों की रचना होती है।

(ङ) चरित्रवान, अच्छे।

(च) रोता हुआ धीरे-धीरे।

(छ) आत्मनिर्भर और विकसित देश ज्यादा प्रदूषण फैला रहे हैं।

6. (क) पद (ख) पाँच

(ग) स्वतंत्र, सार्थक

(घ) शब्द का व्याकरण के नियमों में बँधे होने

(ङ) अव्यय या अविकारी शब्द।

7. (क) भाववाचक

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक

(ग) अचानक (घ) मध्यम पुरुषवाचक

(ङ) निजवाचक (च) क्रिया पदबंध

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1. (क) iii (ख) ii (ग) iv

(घ) iv (च) i (छ)iii

(ज) iii (झ) iv (ञ) i

(ट) iii

02 अनुस्वार एवं अनुनासिक

1. स्वर रहित व्यंजन के साथ 'र' के प्रयोग वाले दस शब्द हैं–
   क्रय, विक्रय, विग्रह, ग्राम, प्रदीप, प्रेम, व्रत, ह्रस्व, ब्रह्मा, भ्रमण।

2. स्वर रहित 'र' के प्रयोग वाले दस शब्द हैं–
   कर्ण, कर्म, चर्म, धर्म, कर्तव्य, खर्च, पर्याय, वर्ण, कर्ज़, गंधर्व।

3. हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी भाषा के बहुत से शब्दों का प्रयोग होता है। इनमें से कुछ शब्दों को शुद्ध रूप में लिखने के लिए अर्धचंद्राकार का प्रयोग किया जाता है। इनके प्रयोग से शब्दों के अर्थ में अंतर स्पष्ट हो जाता है जैसे–
   - बाल – बालक, सिर के बाल
     बॉल – गेंद
   - हाल – दशा
     हॉल – खूब लंबा-चौड़ा कमरा
   - डाल – शाखा
     डॉल – गुड़िया
   - चाक – कुम्हार का चाक
     चॉक – खड़िया मिट्टी

4. अर्धचंद्राकार का चिह्न (ॅ) है, जिसका प्रयोग अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों के साथ किया जाता है जैसे– ऑक्सीजन, डॉक्टर, ऑफिस, हॉट, बॉलीवुड, डॉलर आदि। चंद्रबिंदु का चिह्न (ँ) है, चंद्रबिंदु को 'अनुनासिक' भी कहते हैं। इसका प्रयोग उन शब्दों के साथ किया जाता है, जिनके उच्चारण में वायु नाक और मुख दोनों से निकलती है जैसे– आँख, गाँव, छाँव, आँगन, साँस, हँस, पाँच आदि।

5. जिन शब्दों में भिन्न नासिक्य व्यंजन प्रयुक्त होते हैं अथवा पंचम वर्ण का द्वित्व प्रयोग होता है, वहाँ अनुस्वार का प्रयोग निषेध होता है जैसे– आजन्म, अन्न, सम्मान, मृण्मय, वाङ्मय आदि।

6. (क) नहीं (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) नहीं (ङ) नहीं (च) हाँ (छ) हाँ

7. अनुस्वार – आतंक, चंद्र, हिंदू, पंकज, गंगा, अंगूर, खंड।
   अनुनासिक – हँस, पाँच, अँधेरा, स्त्रियाँ, जहाँ, साँप, आँगन, लहँगा।

8.

धाँसना	ऊँचा	पाँवड़ा	काँपना
पँखुड़ी	चाँदी	पूँजी	उकड़ूँ
धुँधला	झींगुर	धुआँधार	चिड़ियाँ
आँख	औंधा	खंगालना	घूँट
मूँग	कविताएँ	जाँच	बाँकुरा
फाँसना	काँवर	झोंपड़ी	अँधेरा
झाँका	जहाँगीर	फूँकना	छलाँग
गाँव	ऊँट	हँसना	उँगली

9.

लंबोदर	अंबा	दंपति	अंशु
दंत	सम्मान	खंडन	संयुक्त
मंजुल	मंगल	वंदना	हिंदी
गंगा	अंक	मंजुला	अंतरा
अंबुज	गुंजन	कुलवंत	चंद्रिका
चंचरीक	अंबर	चंद्रवार	बंदी
वंश	मंत्र	स्वतंत्र	लंबाई
पंचशील	हंस	यांत्रिक	संस्कार
अंधक	पंथी	पंडित	पंजाब
बिंदी	संशय	संसार	संस्थिति

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1. (क) iii (ख) iv (ग) i
   (घ) ii (ङ) iii (च) ii
   (छ) ii (ज) i (झ) ii
   (ञ) ii (ट) i

03 उपसर्ग एवं प्रत्यय

1. **उपसर्ग + शब्द = नए शब्द**

निस्	छल	निश्छल
निर्	भय	निर्भय
प्र	सिद्ध	प्रसिद्ध
प्र	बल	प्रबल
वि	जय	विजय
अ	धर्म	अधर्म
अ	हिंसा	अहिंसा
बे	घर	बेघर
उप	ग्रह	उपग्रह
उत्	लेख	उल्लेख
अप	यश	अपयश
दुर्	गति	दुर्गति
प्रति	वादी	प्रतिवादी
अव	गुण	अवगुण
दुस्	कर्म	दुष्कर्म

2. **उपसर्ग नए शब्द**

आ	आजीवन, आराम
दुर्	दुर्जन, दुर्बल
अव	अवगुण, अवरोध
परा	पराजय, पराभव
वि	विजय, विनय
अनु	अनुकूल, अनुभव
अप	अपशब्द, अपयश
अन्	अनादर, अनावरण
अधि	अधिकार, अधिगम
परि	परिश्रम, परिधान
उप	उपयुक्त, उपकार
प्र	प्रचार, प्रभार
ला	लाइलाज़, लावारिश
कम	कमज़ोर, कमअकल

3. **प्रत्यय नए शब्द**

त्व	गुरुत्व
ता	मित्रता
अक	पाठक
इया	खटिया
वान	धनवान
ईय	भारतीय
कर	आकर
आलु	दयालु
आऊ	बिकाऊ
ना	लिखना
दार	दुकानदार
आई	दिखाई
पन	अपनापन
आहट	मुसकराहट

4.

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
परतंत्रता	पर	तंत्र	ता
अमानवीय	अ	मानव	ईय
अनुकरणीय	अनु	करण	ईय
उपयोगी	उप	योग	ई
अस्वस्थता	अ	स्वस्थ	ता
नासमझी	ना	समझ	ई
अनजाना	अन	जान	आ
अलौकिक	अ	लोक	इक
बेरोजगारी	बे	रोजगार	ई

5. **शब्द उपसर्ग मूलशब्द**

(क) अवगुण = अव + गुण
(ख) अपशब्द = अप + शब्द
(ग) सदाचार = सत् + आचार
(घ) सुयोग = सु + योग
(ङ) दुर्भाग्य = दुर् + भाग्य
(च) पुनर्जन्म = पुनर् + जन्म
(छ) संवेदना = सम् + वेदना
(ज) विशुद्ध = वि + शुद्ध

(झ) निगम	= नि	+	गम
(ञ) परिश्रम	= परि	+	श्रम
(ट) बदनाम	= बद	+	नाम
(ठ) उपहार	= उप	+	हार
(ड) अधखिला	= अध	+	खिला
(ढ) निरक्षर	= निर्	+	अक्षर
(ण) सज्जन	= सत्	+	जन
(त) उपचार	= उप	+	चार
(थ) सहकर्मी	= सह	+	कर्मी
(द) विभाग	= वि	+	भाग
(ध) बेधड़क	= बे	+	धड़क
(न) प्रदर्शन	= प्र	+	दर्शन
(प) अभिमान	= अभि	+	मान
(फ) दुर्बल	= दुर्	+	बल
(ब) अध्यक्ष	= अधि	+	अक्ष
(भ) सपरिवार	= स, परि	+	वार
(म) आकर्षण	= आ	+	कर्षण
(य) उद्योग	= उत्	+	योग
(र) पराजय	= परा	+	जय
(ल) निराकार	= निर्	+	आकार

6.

शब्द	मूलशब्द		प्रत्यय
(क) पत्रकार	= पत्र	+	कार
(ख) भाषाएँ	= भाषा	+	एँ
(ग) स्त्रीत्व	= स्त्री	+	त्व
(घ) अच्छाई	= अच्छा	+	आई
(ङ) मिठास	= मीठा	+	आस
(च) प्रफुल्लता	= प्रफुल्ल	+	ता
(छ) अपनापन	= अपना	+	पन
(ज) लुटिया	= लोटा	+	इया
(झ) बिहारी	= बिहार	+	ई
(ञ) वियोगिनी	= वियोग	+	इनी
(ट) उच्चतम	= उच्च	+	तम
(ठ) पाठक	= पाठ	+	अक
(ड) पढ़ाकू	= पढ़	+	आकू
(ढ) नीलिमा	= नील	+	इमा
(ण) अनुभूति	= अनुभव	+	इति
(त) चमकीला	= चमक	+	ईला
(थ) साहित्यिक	= साहित्य	+	इक
(द) लालची	= लालच	+	ई
(ध) दिलदार	= दिल	+	दार
(न) सरलता	= सरल	+	ता
(प) सामाजिक	= समाज	+	इक
(फ) गाड़ीवान	= गाड़ी	+	वान
(ब) मौखिक	= मुख	+	इक
(भ) लकड़हारा	= लकड़ी	+	हारा
(म) घबराहट	= घबरा	+	आहट
(य) लिखना	= लिख	+	ना
(र) भावुक	= भाव	+	उक
(ल) दर्शनीय	= दर्शन	+	ईय
(व) ज़ोरदार	= ज़ोर	+	दार
(श) अमरत्व	= अमर	+	त्व
(ष) कविताएँ	= कविता	+	एँ
(स) सुरीला	= सुर	+	ईला
(ह) मोटापा	= मोटा	+	आपा
(क्ष) वस्तुतः	= वस्तु	+	तः
(त्र) चित्रकार	= चित्र	+	कार

7.

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
(क) सम्मानपूर्ण	= सम्	+ मान	+ पूर्ण
(ख) अप्रतीक्षित	= अ	+ प्रतीक्षा	+ इत
(ग) उपलब्धि	= उप	+ लब्धि	+ X
(घ) गुंजायमान	= X	+ गुंजाय	+ मान
(ङ) पूर्वी	= X	+ पूर्व	+ ई
(च) परमाणविक	= X	+ परमाणु	+ इक
(छ) आतिथ्य	= X	+ अतिथि	+ य
(ज) पार्थिवता	= X	+ पार्थिव	+ ता
(झ) गोधूलि	= X	+ गोधूल	+ इ
(ञ) मरियल	= X	+ मर	+ इयल
(ट) वैज्ञानिक	= वि	+ ज्ञान	+ इक
(ठ) परिवर्तन	= परि	+ वर्तन	+ X
(ड) वास्तविकता	= X	+ वास्तव	+ इक, ता
(ढ) प्रतिमूर्ति	= प्रति	+ मूर्ति	+ X
(ण) परलोक	= पर	+ लोक	+ X
(त) नेपाली	= X	+ नेपाल	+ ई
(थ) नौसिखिया	= नव	+ सीख	+ इया
(द) सुरक्षित	= सु	+ रक्षा	+ इत
(ध) स्वाभाविक	= स्व	+ भाव	+ इक

(न) दिलचस्पी = x + दिलचस्प + ई
(प) संचालन = सम् + चाल + अन
(फ) ढलाऊ = x + ढल + आऊ
(ब) अनादर = अन् + आदर + x
(भ) आणविक = x + अणु + इक
(म) सर्वाधिक = सर्व + अधिक + x
(य) अनगिनत = अन + गिनती + x
(र) अप्रत्याशित = अ, प्रति +आशा + इत
(ल) परमाणुओं = x + परमाणु + ओं
(व) अत्यंत = अति + अंत + x
(श) फिसलती = x + फिसल + ती
(ष) वियोगिनी = वि + योग + इनी
(स) प्रायोगिक = प्र + योग + इक
(ह) अनावश्यक = अन् + आवश्यक + x
(क्ष) उपकरणों = उप + करण + ओं
(त्र) अकरणीय = अ + करण + ईय

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

उपसर्ग

(क) i (ख) ii (ग) ii (घ) iii (ङ) ii
(च) ii (छ) ii (ज) i (झ) iii (ञ) iv
(ट) ii (ठ) ii

प्रत्यय

(क) i (ख) ii (ग) iii (घ) i (ङ) i
(च) i (छ) iii (ज) iii (झ) iii

04 स्वर संधि

1. संधि-विच्छेद

1. विद्यार्थी – विद्या + अर्थी
2. कृष्णावतार – कृष्ण + अवतार
3. वीरांगना – वीर + अंगना
4. शर्णार्थी – शरण + अर्थी
5. कवींद्र – कवि + इंद्र
6. परीक्षा – परि + ईक्षा
7. न्यायाधीश – न्याय + अधीश
8. अन्नाभाव – अन्न + आभाव
9. पद्यांजलि – पद्य : अंजलि
10. श्रद्धानंद – श्रद्धा + आनंद
11. चरमोत्कर्ष – चरम + उत्कर्ष
12. गजानन – गज + आनन
13. महोदय – महा + उदय
14. वीरोचित – वीर + उचित
15. उपासाना – उप + आसना
16. कुशासन – कुश + आसन
17. चंद्रोदय – चंद्र + उदय
18. सदैव – सदा + एव
19. सूर्यास्त – सूर्य + अस्त
20. जीवाणु – जीव + अणु
21. भानूदय – भानु + उदय
22. वधूत्सव – वधु + उत्सव
23. परमार्थी – परम + अर्थी
24. सुखांत – सुख + अंत
25. सहानुभूति – सह + अनुभूति
26. सारांश – सार + अंश
27. स्वार्थी – स्व + अर्थी
28. अभ्यागत – अभि + आगत
29. रत्नाकर – रत्न + आकर
30. फलादेश – फल + आदेश
31. छात्रावास – छात्र + आवास
32. सीमांत – सीमा + अंत
33. तथापि – तथा + अपि
34. महार्णव – महा + अर्णव
35. सहायतार्थ – सहायता + अर्थ
36. सीमांकित – सीमा + अंकित
37. कवीश्वर – कवि + ईश्वर

38. प्रतीक्षा – प्रति + ईक्षा
39. रवीश – रवि + ईश
40. हरीश – हरि + ईश
41. शशींद्र – शशि + इंद्र
42. श्रीश – श्रीः + ईश
43. नारीश – नारि + ईश
44. प्रतीति – प्रति + ईति
45. नारीच्छा – नारी + इच्छा
46. नारींदु – नारी + इंदु
47. सूक्ति – सु + उक्ति
48. बहुद्देशीय – बहु + उद्देशीय
49. विधूदय – विधु + उदय
50. अंबूर्मी – अंबु + ऊर्मि
52. भूर्ध्व – भू + ऊर्ध्व
53. यथेष्ट – यथा + इष्ट
54. जलोर्मी – जल + ऊर्मी
55. महेश्वर – महा + ईश्वर
56. गजेंद्र – गज + इंद्र
57. कर्मेंद्रिय – कर्म + इंद्रिय
58. रूपेंद्र – रूप + इंद्र
59. स्वेच्छा – स्व + इच्छा
60. जितेंद्रीय – जित + इंद्रिय
61. धर्मेंद्र – धर्म + इंद्र
62. योगेश्वर – योगिन् + ईश्वर
63. भुवनेश्वर – भुवन + ईश्वर
64. रूपेश – रूप + ईश
65. ब्रजेश – ब्रज + ईश
66. गणेश – गण + ईश
67. दिनेश – दिन + ईश
68. भोजनालय – भोजन + आलय
69. महेती – महा + इति
70. लंकेश्वर – लंका + ईश्वर
71. नर्मदेश्वर – नर्मदा + ईश्वर
72. पूर्वोत्तर – पूर्व + उत्तर
73. मदोत्मत – मद + उत्मत
74. राजोचित – राजा + उचित
75. भाग्योदय – भाग्य + उदय
76. नामोल्लेख – नाम + उल्लेख
77. रोगोपचार – रोग + उपचार
78. नवोदित – नव + उदित
79. नवोढ़ा – नव + ऊढ़ा
80. राजर्षि – राज + ऋषि
81. यथैव – यथा + एव
82. उत्तमौषध – उत्तम + औषध
83. महौध – महा + औध
84. प्रत्युत्तर – प्रति + उत्तर
85. न्यून – नि + ऊन
86. अन्वय – अनु + अय
87. अन्वेषण – अनु + एषण
88. नद्यर्पण – नदि + अर्पण
89. मात्राज्ञा – मात्र + आज्ञा
90. मात्रुपदेश – मात्र + उपदेश
91. प्रत्यक्षर – प्रति + अक्षर
92. व्यूह – वि + ऊह
93. व्याप्त – वि + आप्त
94. प्रत्यंग – प्रति + अंग
95. भवन – भो + अन
96. पवित्र – पौ + इत्र
97. गायिका – गै + इका
98. गायन – गै + अन
99. भविष्य – भो + इष्य
100. हवन – हो + अन
101. उल्लास – उत् + लास
102. तद्रूप – तत् + रूप
103. अब्ज – अप् + ज
104. उद्यम – उत + यम
105. उज्जवल – उत् + ज्वल
106. संचित – सम् + चित
107. संताप – सम् + ताप
108. पूर्ण – पूर् + न
109. कृष्णा – कृष् + ना
110. निषेध – नि + सेध
111. दुस्तर – दुः + तर
112. दुर्लभ – दुः + लभ
113. अधोपतन – अधः + पतन
114. निर्भय – निः + भय

115. एकाकार - एक + आकार
116. चरमोत्कर्ष - चरम् + उत्कर्ष
117. संयोग - सम् + योग
118. रूपांतरण - रूप + अंतरण
119. चित्रांकन - चित्र + अंकन
120. नि:स्वाद - नि: + स्वाद

2. संधि

1.	भावार्थ	2.	चराचर
3.	देवार्चन	4.	अन्यार्थ
5.	विस्मयादि	6.	नवागत
7.	सीतार्थ	8.	यथार्थ
9.	महाश्य	10.	दिवाकर
11.	अतीव	12.	शशीद्र
13.	फणीश्वर	14.	प्रतीक्षा
15.	पत्नीच्छा	16.	श्रीश
17.	सूक्ति	18.	अनोदित
19.	लघूर्मी	20.	भूद्धार
21.	भूर्ध्व	22.	दयोर्मि
23.	पूर्णेंद्र	24.	नरेश
25.	योगेश	26.	राकेश
27.	महेश्वर	28.	वीरोचित
29.	मदोन्मत	30.	उत्तरोत्तर
31.	सर्वोत्तम	32.	नवोढ़ा
33.	गंगोदक	34.	वसंतऋतु
35.	परमोज	36.	एकाकेक
37.	लोकेषण	38.	व्यूह
39.	अत्यंत	40.	देवार्पण
41.	उपर्युक्त	42.	अध्येता
43.	मध्वरि	44.	अन्वेषक
45.	भ्रात्राज्ञा	46.	पित्रिच्छा
47.	भविष्य	48.	गायन
49.	दिग्गज	50.	संतवाणी
51.	सम्मति	52.	संतारी
53.	तल्लीन	54.	उच्चारण
55.	तच्छंकर	56.	विच्छेद
57.	संगत	58.	किंकर
59.	निर्मल	60.	तपोवन

3. संधि व उनके नाम

1. मनोबल - विसर्ग संधि
2. ऋण - व्यंजन संधि
3. चिन्मय - व्यंजन संधि
4. परमार्थ - दीर्घ संधि
5. सूर्यास्त - दीर्घ संधि
6. राजर्षि - गुण संधि
7. दिनेश - गुण संधि
8. सदैव - वृध्दि संधि
9. इत्यादि - यण - संधि
10. शयन - अयादि संधि
11. दिग्गज - व्यंजन संधि
12. अधोपतन - विसर्ग संधि
13. प्रत्यूष - यण संधि
14. महेश - गुण संधि
15. परमाणु - यण संधि

4. संधि के उदाहरण

1. दीर्घ संधि - विद्यालय, गिरीश, लघूर्मी, धर्मार्थ, स्वार्थी
2. यण संधि - अत्यधिक, अन्वय, पर्यावरण, पित्रानंद, न्यून
3. गुण संधि - रमेश, उपेंद्र, नरेंद्र, नागेश, प्राणेश्वर
4. अयादि संधि - विधायक, नयन, प्रलय, नाविक, भावुक
5. वृद्धि संधि - सदैव, महैश्वर्य, महौषधि, टिकैत, रमेश्वर्य

5. बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. (क) (iii) (ख) (iv)
(ग) (i) (घ) (i)
(ङ) (i) (च) (iv)
(छ) (iv) (ज) (i)
(झ) (iii) (ञ) (iv)
(ट) (iv) (ठ) (i)

05 विराम-चिह्न
(Punctuation Mark)

(अभ्यास-उत्तर)

1. निम्नलिखित के विराम-चिह्न लिखिए–

(क) लाघव चिह्न ०
(ख) कोष्ठक चिह्न ( )
(ग) योजक चिह्न -
(घ) उपविराम-चिह्न (:)
(ङ) विस्मयादिबोधक -
(च) उद्धरण चिह्न (" ") या (' ')

2. विराम-चिह्न पहचानकर लिखिए–

(क) [–] निर्देशक चिह्न
(ख) [;] अर्ध विराम
(ग) [^] हंसपद / त्रुटिपूरक
(घ) [।] पूर्ण विराम
(ङ) [?] प्रश्नवाचक चिह्न
(च) [,] अल्प विराम

3. निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थान पर विराम-चिह्न लगाइए–

(क) क्या बात है? तुम हँस क्यों रहे हो?
(ख) मेरे माता-पिता बाज़ार गए हैं।
(ग) मैंने उससे पूछा, "क्यों जी तुमने यहाँ क्या-क्या देखा"?
(घ) अध्यापक ने कहा, "कल तुम्हारी परीक्षा है"।
(ङ) हिमालय सही मायनों में देश का पहरेदार है।
(च) वाह! मैं परीक्षा में पास हो गया।
(छ) राजा क्या तुमने सुषमा को चाँटा मारा?
(ज) अच्छा दुर्योधन ज़्यादा मत बोलो, आओ निशाना साधो।
(झ) भव्या ने कहा–"पृथ्वी गोल है"
(ञ) विनोद तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?
(ट) पिता जी : मोहन, मैं कानपुर जा रहा हूँ।
(ठ) छोटी सी बात पर पिता जी गुस्सा हो गए।
(ड) अरे! तुम गाना भी गाते हो?
(ढ) सुनीता का भाई एम० ए० है।
(ण) गणतंत्र दिवस की परेड में बच्चे, बूढ़े, जवान सभी शामिल हुए।
(त) हमें घर पहुँचना है, जल्दी करो सारी तैयारी भी करनी है।
(थ) क्रिया के दो भेद हैं-अकर्मक, सकर्मक
(द) दोनों बैल कमज़ोर हो गए हैं।
(ध) छुट्टियों में सब अपने अपने घर चले गए।
(न) बरगद के पेड़ को संस्कृत में 'वट' कहते हैं।
(प) हाँ, हाँ, मुझे, याद है।
(फ) 'भक्ति काल' हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है।
(ब) ओह! उसके पिता जी चल बसे।
(भ) अरे! आप भी गए।
(म) बूढ़ा धीरे-धीरे चल रहा है।
(य) भारती ने कहा–मैं भी आम खाऊँगी।
(र) परशुराम - (क्रोधित होकर) राजन! यह अभद्र बालक कौन है?
(ल) मोहन के पिता जी का नाम डॉक्टर उमेश कुमार है।
(व) अर्जुन, मेरी बात सुनो।
(श) गंगा, यमुना, कोसी, और ब्रह्मपुत्र नदियाँ हिमालय से निकली हैं।

4. रिक्त स्थान भरिए–

(क) विराम का अर्थ है– <u>ठहरना</u>।
(ख) वाक्य पूरा हो जाने पर <u>पूर्ण विराम</u> चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
(ग) प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में <u>प्रश्नवाचक</u> चिह्न का प्रयोग होता है।

(घ) वाक्य में प्रयुक्त शब्द-युग्म अलग करने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(ङ) किसी व्यक्ति के कथन को ज्यों का त्यों लिखने के लिए उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(च) लाघव चिह्न का प्रयोग शब्दों को संक्षिप्त रूप से लिखने के लिए किया जाता है।

5. चिह्नों को उनके नाम से मिलाइए–

(क)	(—)	(v) निर्देशक-चिह्न
(ख)	(“ ”)	(vii) उद्धरण-चिह्न
(ग)	(०)	(i) लाघव-चिह्न
(घ)	(;)	(vi) अर्धविराम-चिह्न
(ङ)	(-)	(ii) योजक-चिह्न
(च)	(!)	(viii) विस्मयादि-चिह्न
(छ)	(?)	(iii) प्रश्नसूचक-चिह्न
(ज)	[^]	(iv) त्रुटिपूरक-चिह्न

बहुविकल्पी प्रश्न

(अभ्यास-उत्तर)

1. (क) (i) (ख) (iii)
(ग) (ii) (घ) (iii)
(ङ) (iii) (च) (ii)
(छ) (iii) (ज) (iii)
(झ) (iii) (ञ) (i)
(ट) (ii) (ठ) (ii)
(ड) (iv) (ढ) (iii)
(ण) (iii)

06 अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद

(Kinds of Sentences on The Basis of Meaning)

1. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हैं। इनका परिचय एवं उदाहरण इस प्रकार है–

(क) विधानवाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जिसमें किसी क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती हो, उन्हें 'विधानवाचक वाक्य' कहते हैं। विधानवाचक वाक्य को 'विधिवाचक वाक्य' भी कहा जाता है जैसे–किसान हल चलाता है।

(ख) निषेधवाचक वाक्य : ऐसे वाक्य में जिनमें किसी कार्य के न होने या न करने का बोध हो, उन्हें 'निषेधवाचक वाक्य' कहते हैं जैसे–आज हमारे अध्यापक नहीं आए।

(ग) प्रश्नवाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जिनमें प्रश्न किया जाए तथा उत्तर पाने की अपेक्षा हो, उन्हें 'प्रश्नवाचक वाक्य' कहते हैं

जैसे – तुम कल खेलने क्यों नहीं आए थे?

(घ) विस्मयादिवाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जिनमें विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, शोक, घृणा आदि का भाव व्यक्त हो, उन्हें 'विस्मयादिवाचक वाक्य' कहते हैं

जैसे–अरे! इतना बड़ा साँप। (विस्मय); वाह! उसने सुंदर शॉट लगाया। (हर्ष)

(ङ) आज्ञावाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जिनमें आज्ञा, आदेश, प्रार्थना या उपदेश आदि का बोध हो, उन्हें 'आज्ञावाचक वाक्य' कहते हैं जैसे–तुम बाज़ार चले जाओ।

(च) इच्छावाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जिनमें इच्छा, आशा, आशीर्वाद, शाप या शुभकामना का बोध हो, उन्हें 'इच्छावाचक वाक्य' कहते हैं जैसे–आपका भविष्य उज्ज्वल हो।

(छ) संदेहवाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जिनमें किसी कार्य के होने में संदेह या संभावना हो, उन्हें 'संदेहवाचक वाक्य' कहते हैं जैसे – हो सकता है, आज वह विद्‌यालय गया हो।

(ज) संकेतवाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जिनमें एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें 'संकेतवाचक वाक्य' कहते हैं जैसे–अगर तुम जाते, तो मैं भी साथ चलता।

2. **वाक्य-भेद निम्नलिखित दो आधारों पर किया जाता है–**

(i) अर्थ के आधार पर– इस आधार पर वाक्यों के आठ भेद होते हैं।

(ii) रचना या बनावट के आधार पर– इस आधार पर वाक्यों के तीन भेद होते हैं।

3. (क) इच्छावाचक वाक्य
(ख) संकेतवाचक वाक्य
(ग) विधानवाचक वाक्य
(घ) संदेहवाचक वाक्य
(ङ) विस्मयादिवाचक वाक्य
(च) संदेहवाचक वाक्य
(छ) विस्मयादिवाचक वाक्य
(ज) आज्ञावाचक वाक्य
(झ) संदेहवाचक वाक्य
(ञ) संकेतवाचक वाक्य
(ट) संदेहवाचक वाक्य
(ठ) विधानवाचक वाक्य
(ड) विस्मयादिवाचक वाक्य
(ढ) निषेधवाचक वाक्य
(ण) निषेधवाचक वाक्य
(त) निषेधवाचक वाक्य
(थ) निषेधवाचक वाक्य
(द) इच्छावाचक वाक्य
(ध) विस्मयादिवाचक वाक्य
(न) आज्ञावाचक वाक्य
(प) निषेधवाचक वाक्य
(फ) संकेतवाचक वाक्य
(ब) इच्छावाचक वाक्य
(भ) विस्मयादिवाचक वाक्य
(म) प्रश्नवाचक वाक्य
(य) आज्ञावाचक वाक्य
(र) निषेधवाचक वाक्य
(ल) आज्ञावाचक वाक्य
(व) संकेतवाचक वाक्य
(श) निषेधवाचक वाक्य

4. (क) अरे! तिब्बत में डाकुओं का इतना खतरा है।
(ख) यदि घोड़ा तेज़ चलता तो मैं जल्दी पहुँच जाता।
(ग) देर से पहुँचने पर सुमित शायद नाराज़ हो जाएँगे।
(घ) बच्चो, इन पौधों को नष्ट होने और सूखने से बचाओ।
(ङ) गया ने भागते हीरा-मोती को कैसे पकड़ा?
(च) हीरा-मोती ने साँड़ को जान से नहीं मारा।
(छ) मेरी इच्छा है कि हम बौद्‌धिक दासता न स्वीकारें।
(ज) सुभाषचंद्र बोस ने देश के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

5. (क) ओह! तुमने खूब पढ़ाई की।
(ख) शायद वह कल यहाँ आए।
(ग) अब मुझे चलने की अनुमति दें।
(घ) सब अपनी पुस्तकें खोलो।
(ङ) दरज़ी ने कपड़े सिल दिए होंगे।
(च) मैं स्कूल जाकर पढ़ाई करता हूँ।
(छ) परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो।
(ज) पुस्तकें अलमारी में रखी जाए।
(झ) अरे! पप्पू पास हो गया।
(ञ) शायद वह इस साल परीक्षा न दे।
(ट) क्या युवा क्रांतिकारी रात में गुप्त स्थान पर एकत्र होकर योजनाएँ बनाते थे?
(ठ) अरे! जानवरों में गधे को सबसे बुद्धिहीन माना जाता है।
(ड) झूरी बैलों को मारता-पीटता नहीं था।
(ढ) हीरा-मोती मोटी रस्सियों में बँधने पर न भाग पाते।
(ण) लेखक और उसके साथी तिङ्री के विशाल मैदान में होंगे।
(त) वाह! यह उपहार बहुत कीमती और सुंदर है।
(थ) मैं चाहता हूँ कि चारों ओर उत्पादन बढ़ाने पर ज़ोर हो।
(द) यदि हम पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण करेंगे तो बौद्धिक दासता के शिकार होंगे।
(ध) समय पर फ़सल बोने से किसान को अच्छी उपज मिलती है।
(न) क्या जाने-अनजाने में आज के माहौल में हमारा चरित्र बदल रहा है?
(प) स्त्रियों का सम्मान नहीं होता है।
(फ) अरे! अंकित प्रतिदिन पढ़ता है।
(ब) क्या राम की पत्नी बहुत बीमार है?
(भ) स्त्रियों की दशा में सुधार नहीं आया है।
(म) क्या आपने पाठ याद कर लिया?
(य) यदि बड़े आशीर्वाद देते तो खुशहाली आती।

6. (क) (vi) (ख) (v)
(ग) (viii) (घ) (vii)
(ङ) (ii) (च) (iii)
(छ) (iv) (ज) (i)

7. (क) संदेहवाचक वाक्य
(ख) इच्छावाचक वाक्य
(ग) इच्छावाचक वाक्य
(घ) प्रश्नवाचक वाक्य
(ङ) संकेतवाचक वाक्य
(च) विधानवाचक वाक्य
(छ) आज्ञावाचक वाक्य
(ज) आज्ञावाचक वाक्य
(झ) प्रश्नवाचक वाक्य
(ञ) संदेहवाचक वाक्य
(ट) निषेधवाचक वाक्य
(ठ) विधानवाचक वाक्य
(ड) विस्मयादिवाचक वाक्य
(ढ) निषेधवाचक वाक्य
(ण) विधानवाचक वाक्य
(त) आज्ञावाचक वाक्य

8. (क) कुआँ में पानी है।
कुआँ में पानी नहीं है।
(ख) कुआँ में पानी है।
क्या कुआँ में पानी है।
(ग) कुआँ में पानी है।
वाह! कुआँ में पानी है।
(घ) शाबाश! कुआँ में पानी है।
कुआँ में पानी है।
(ङ) ड्राइवर गाड़ी तेज़ चला रहा है।
ड्राइवर गाड़ी तेज़ चलाओ।
(च) यह ड्राइवर गाड़ी तेज़ चला रहा है।
शायद ड्राइवर गाड़ी तेज़ चलाए।
(छ) सावन में बारिश होगी।
सावन में बारिश हो।
(ज) शायद सावन में बारिश हो।
सावन में बारिश होगी।

9. (क) उसके व्यवहार को सब जानते हैं।
(ख) क्या उसने अपना काम पूरा कर लिया?
(ग) शायद कल विद्यालय की छुट्टी होगी।
(घ) बाप रे बाप! इतना बड़ा हाथी।
(ङ) शायद मैं कल विद्यालय नहीं जाऊँ।
(च) वाह! वह कक्षा में प्रथम आया।
(छ) उसने बात की।
(ज) अर्चना, अपना पाठ याद करो।
(झ) आज बहुत ठंड नहीं है।
(ञ) वह नहीं मानेगा।
(ट) अरे! तुम आ गए हो?
(ठ) क्या आज मामा जी आएँगे?
(ड) वीरेश प्रतिदिन व्यायाम किया करो।
(ढ) क्या तुम्हारा मित्र आज विद्यालय नहीं जाएगा?
(ण) हो सकता है, तुम प्रधानाचार्य जी से बात करो।
(त) आज वर्षा आए।
(थ) कक्षा में सभी छात्र शांत बैठे इसके लिए धन्यवाद।
(द) क्या वह दिल्ली जाएगा?
(ध) अपनी-अपनी आस्थानुसार नित्य प्रार्थना कीजिए।
(न) उसने कोई उपाय नहीं छोड़ा है।

<u>बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर</u>

1. (क) i (ख) ii (ग) iii
(घ) i (ङ) iv (च) i
(छ) ii (ज) iii (झ) ii
(ञ) iv (ट) i

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–1

1. रचना के आधार पर शब्द निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं–
(क) रुढ़ या मूल शब्द (ख) यौगिक शब्द
(ग) योगरूढ़ शब्द।
2. (क) चाँद (ख) डंडा
3. (क) (i) अधर्म, (ii) दुर्जन
(ख) (i) ई, (ii) कार
4. (क) (i) सदैव (ii) महोदय
(ख) (i) नर + उचित (ii) सु + उक्ति
(ग) (i) अभिज्ञ, (ii) विग्रह
5. (क) अरे! जरा ठहरो, मेरी ओर देखो।
(ख) वह बूढ़ा किसका है? अब तो निकाल देना चाहिए।
6. (क) विधानवाचक (ख) निषेधवाचक।

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–2

1. जब कोई शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है, जब वह शब्द 'पद' बन जाता है। अर्थ के आधार पर शब्द के निम्नलिखित चार भेद हैं–
(क) पर्यायवाची शब्द (ख) विलोम शब्द
(ग) एकार्थी शब्द (घ) अनेकार्थी शब्द
2. (क) माँद (ख) अंग
3. (क) (i) अधिपति, (ii) प्रबल
(ख) (i) बढ़िया, (ii) चारगुना
4. (क) (i) वनौषध, (ii) भावुक
(ख) (i) अति + आचार (ii) परम+अर्थ
5. (क) देखो, कौन आया है? उसे कुरसी पर बैठाओ।
(ख) बाबु हँसा आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती है?
6. (क) विधानवाचक (ख) निषेधवाचक।

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–3

1. एक या अनेक वर्णो के मेल से निर्मित स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि को 'शब्द' कहा जाता है। जब कोई शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है, तब वह शब्द 'पद' बन जाता है।

2. (क) कंकड़, (ख) आँख।
3. (क) (i) अनुज, (ii) अनुचर
(ख) (i) ता, (ii) औती
4. (क) (i) धर्मात्मा (ii) सूर्योद्य
(ख) (i) सर्व + उदय (ii) नव + ऊढ़ा
5. (क) जो सहनशीलता होते हैं, उन्हें अधिक दुख झेलना पड़ता है।
(ख) आप क्या करने आए हैं?
6. (क) विधानवाचक (ख) निषेधवाचक।

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र-4

1. एक या अनेक वर्णों के मेल से निर्मित स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि को 'शब्द' कहा जाता है, परंतु जब वही शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है तब वह 'पद' बन जाता है जैसे-राम दौड़ता है। यहाँ 'राम' शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर 'पद' में परिवर्तित हो गया है।
2. (क) संसार (ख) साँप
3. (क) (i) बेआबरू, (ii) चिरायु
(ख) (i) ई, (ii) आनी
4. (क) (i) तथैव (ii) स्वागत
(ख) (i) अनु + एषण (ii) यदि + अपि
5. (क) वाह! हम मैच जीत गए।
(ख) जिसने नीली कमीज़ पहनी है, उसे बुलाओ।
6. (क) विधानवाचक (ख) निषेधवाचक।

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र-5

1. जब कोई शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है, तब वह शब्द 'पद' बन जाता है। पद मुख्यत: पाँच प्रकार के होते हैं- 1. संज्ञा, 2. सर्वनाम, 3. विशेषण, 4. क्रिया, 5. अव्यय।
2. (क) पंडाल (ख) पाँच
3. (क) (i) अपमान, (ii) बदनाम
(ख) (i) भूलक्कड़, (ii) बिछौना
4. (क) (i) महौदार्य, (ii) स्वार्थ
(ख) (i) रजनी + ईश, (ii) चंद्र + उदय
5. (क) उफ! कितनी गरमी है।
(ख) 'गोदान' प्रेमचंद की रचना है।
6. (क) विस्मयादिवाचक (ख) प्रश्नवाचक

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र-6

1. 'शब्द' भाषा की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है, जो एक निश्चित अर्थ का बोध कराती है। रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं- 1. रुढ़ शब्द, 2. यौगिक शब्द, 3. योगरुढ़ शब्द।
2. (क) हंस (ख) काँच
3. (क) (i) प्रवास, (ii) सुशील
(ख) (i) अक्कड़, (ii) ई
4. (क) (i) भाग्योदय, (ii) लौकेषणा
(ख) (i) पितृ + आज्ञा,(ii) अधि+आदेश
5. (क) क्या बात है, तुम बहुत हँस रहे हो?
(ख) भव्य ने कहा - "पृथ्वी गोल है।"
6. (क) प्रश्नवाचक (ख) संकेतवाचक

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र-10

1. 'शब्द' भाषा की एक स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है, जो एक निश्चित अर्थ का बोध कराती है। व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं-1. विकारी शब्द और 2. अविकारी शब्द।
2. (क) खंडहर (ख) खँजन
3. (क) (i) उपहार, (ii) प्रत्येक
(ख) (प) इत, (ii) शाली
4. (क) (i) अध्येता, (ii) स्वास्ति
(ख) (i) अभि + इष्ट,(ii) दया+आनंद
5. (क) जो दूसरों की सहायता करते हैं, ईश्वर उन्हीं की सहायता करते हैं।
(ख) मेरी पुस्तकें क्यों नहीं लाए?
6. (क) आज्ञावाचक (ख) संकेतवाचक

01 अनुच्छेद-लेखन
(Paragraph Writing)

1. जीवन में इंटरनेट का उपयोग

विज्ञान का एक वरदान है—इंटरनेट। इंटरनेट आज हर व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अंग बनता जा रहा है। विज्ञान के बढ़ते चरण आज हमारे लिए ऐसे अनेक चमत्कार लेकर आए हैं, जिससे आज दुनिया हमारी मुट्ठी में प्रतीत होती है। माउस (चूहा) पर क्लिक कीजिए और सारी दुनिया आपकी आँखों के सामने आ जाएगी। शिक्षा में सहायक कंप्यूटर और कंप्यूटर में प्राप्त इंटरनेट की सुविधा अद्भूत है। इसने आज पूरे संसार को एक सूत्र में बाँध रखा है। विभिन्न विषयों की जानकारी इंटरनेट के द्वारा सहजता से उपलब्ध हो जाती है। आज इंटरनेट पर देश-विदेशों में विभिन्न घटनाओं की जानकारी, ज्योतिष संबंधी जानकारी, खेल-जगत, संगीत, शिक्षा, फ़िल्म, मौसम, विवाह करवाने, नौकरी प्राप्त करने, टिकट बुकिंग, होटल बुकिंग, खरीददारी सभी कुछ बड़ी ही सरलता से संभव हो जाती है। अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए दूर बैठे लोगों से संपर्क साधने के लिए, स्कूल-कॉलेजों में दाखिले की जानकारी के लिए, अस्पताल की जानकारी के लिए इंटरनेट हमारे कीमती समय को बचाते हुए हमें आधुनिकता की ओर तीव्र गति से ले जा रहा है।

2. पर्यावरण का संरक्षण

'पर्यावरण' का शाब्दिक अर्थ है—हमारे चारों ओर का प्राकृतिक आवरण। जो कुछ भी हमारे चारों ओर विद्यमान है, हमें अपने सुरक्षित बाँहों में समेटे हुए है, उसे ही 'पर्यावरण' कहते हैं। प्रकृति ने मानव के लिए एक स्वच्छ एवं सुखद आवरण बनाया है, किंतु मानव ने अपने स्वार्थ में एक ओर प्राकृतिक सुविधाओं का अंधाधुंध लाभ उठाकर उसका शोषण किया है, तो दूसरी ओर प्रगति के नाम पर शोर-गुल, धुआँ, जहरीली गैसें वायुमंडल में भर दी हैं। यही नहीं नदियों के जल को भी दूषित कर विषाक्त बना दिया है। वायु हमारे प्राणों का आधार है। पर इसमें हमने अज्ञानतावश कारखाने के धुएँ, राख जैसे विषैला पदार्थ मिला दिए हैं। इससे पर्यावरण प्रदूषित हो गया है और हमारे जीवन भी कई विषम बीमारियों से ग्रसित हो गए हैं। जहरीली हवा हमें अब तक स्वच्छ जीवन प्रदान कर सकती है। वृक्ष लगाकर इस खतरे से बचा जा सकता है। वृक्षों से वायु-प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई में भी मदद मिलती है। वनों से मानसून का चक्र भी संयमित होता है। वृक्षों के इस व्यापक महत्व को देखते हुए हर वर्ष 'वन महोत्सव' का आयोजन किया जाए। इस मौके पर स्कूलों और कॉलोजों में वृक्षारोपण के कार्यक्रम का आयोजन किया जाए। जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी भी पर्यावरण के इस महत्व को समझ सके और पर्यावरण के साथ-साथ हमारी धरती सुरक्षित हो सके।

3. स्वस्थ जीवन का राजयोग

'तंदुरुस्ती हज़ार नियामत' अर्थात अकेले स्वास्थ्य ही हज़ारों नियामतों के समान है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन बसता है और स्वस्थ मन से ही एक स्वस्थ समाज का

निर्माण होता है। जब शरीर स्वस्थ होता है तभी स्वस्थ विचार उत्पन्न हो सकते हैं और उत्तम कार्य हो सकते हैं, जिनसे धन, प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति होती है। स्वास्थ्य की उपेक्षा करना बिलकुल ही ठीक नहीं है। स्वास्थ्य की उपेक्षा करना बिलकुल ही ठीक नहीं है। स्वास्थ्य रक्षा के कई साधन हैं जिससे स्वास्थ्य को संतुलित रखा जा सकता है। संतुलित आहार, पौष्टिक भोजन और नियमित व्यायाम करने से मनुष्य अपने शरीर को स्वस्थ व स्फूर्तिवान बना सकता है।
आवश्यकता है तो दृढ़-निश्चय होने का, समय का सदुपयोग कर अपने जीवन को स्वस्थ बनाकर अपने उद्देश्य व लक्ष्य प्राप्त कर एक स्वस्थ्य समाज के निर्माण में अपना योगदान देना।

4. आतंकवाद

भारत में आतंकवाद की शुरुआत बंगाल में नक्सलवादियों द्वारा आरंभ की गई। इसको आगे बढ़ाने का काम पंजाब में खालिस्तान बनाने की माँग से हुआ। जिसके परिणामस्वरूप असंख्य बेगुनाहों की जान गई थी। आज स्थिति यह है कि इसका स्वरूप इतना विकृत हो चुका है कि धीरे-धीरे समूचा भारत इसका शिकार हो गया है। जन-जन में आज भय समाहित है। देश की स्थिति यह है कि देश के लोग ही इसे खोखला करने में लीन हैं। बेरोज़गारी से बचने के लिए धार्मिक युद्ध (जेहाद) का मुखौटा ओढ़कर आतंकवाद में कदम रखने वाले युवा देश में अशांति और अस्थिरता का माहौल फैलाकर अपनी जीत समझ बैठे हैं। अत्यधिक आबादी भी आतंकवाद का जन्मदाता है जितनी आबादी उतनी ही बेरोज़गारी और उतनी ही जीवन जीने की मुश्किलें। आतंकवाद को खत्म करने के लिए देश में कई कानून भी बनाए गए हैं लेकिन सरकार को उसके लिए और भी सख्त कदम उठाने की जरूरत है।

5. क्रिकेट और भारत

भारत में क्रिकेट देश का सबसे लोकप्रिय खेल है। यह भारत में लगभग हर जगह खेला जाता है। भारतीय क्रिकेट टीम भारत की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम है। सन 1848 में भारत में पहले क्रिकेट क्लब की शुरुआत हुई थी। भारत में क्रिकेट खेल को राष्ट्रधर्म की तरह देखा जाता है। क्रिकेट की दुनिया में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका, इग्लैंड, आयरलैंड, न्यूजीलैंड, अफगानिस्तान, स्कॉटलैंड, वेस्ट-इंडीज, जिंबाव्वे आदि का प्रमुख नाम है। क्रिकेट का जितना जुनून भारत के साथ पड़ोसी देशों जैसे–पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका में देखा जाता है, शायद उतना दूसरे देशों में नहीं। यहाँ के लोग भी जुनून की हद तक क्रिकेट मैच देखते हैं। अपने देश के जीत की कामना भी मन से करते हैं। अपने देश के टीम के जीतने पर जिस प्रकार खिलाड़ियों को सर पर चढ़ाते हैं और हार के बाद उसी तरह का आक्रोश भी दिखाते हैं। लोगों का जितना रुझान प्रधानमंत्री के भाषण में भी नहीं होता उतना क्रिकेट में होता है। छोटे-छोटे बच्चे भी इस खेल के दिवाने हैं और वे इसे छोटी-सी खुली जगहों में भी इसे खेलते रहते हैं। खासतौर से सड़क और पार्क में। क्रिकेट ही नहीं बल्कि किसी भी प्रकार के खेल से स्वास्थ्य और उत्साह तो बढ़ता ही है साथ ही स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का भी विकास होता है। क्रिकेट के खेल से आपसी एकता तथा भाईचारा का भी विकास होता है। विश्व कप टूर्नामेंट के

समय समूचा विश्व जैसे एक परिवार ही बन जाता है और यह क्रिकेट के खेल की एक बड़ी उपलब्धि है।

6. जंगल के जीवों की सुरक्षा

पर्यावरण में संतुलन बनाए रखने में वनस्पति व जीव-जंतु एक अहम् भूमिका निभाते हैं। पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी जीव प्रकृति की संतान हैं। सभी एक-दूसरे के हित में कार्य करते हुए आपसी संबंध के सहारे जीवन-प्रणाली चलाते हैं। जंगल के साथ-साथ जंगली जानवर भी अब लुप्त हो जा रहे हैं। उनकी देख-रेख की अभाव के कारण कई ऐसी जातियाँ जो अब सिर्फ किताबों के पन्नों तक रह गई हैं। जानवरों को भी समान अधिकार है, जैसे हम इनसानों की है, भूमि पर जीवित रहने के लिए। सभी जीवित प्राणी एक ही सर्वशक्तिमान द्‌वारा बनाए गए हैं। हमारे पास उनके दुरूपयोग या उन्हें मारने का अधिकार नहीं है। हमें उन लागों को रोकना होगा जो इन जानवरों का दुरूपयोग करते हैं। यदि कोई जानवर या पशु-पक्षी किसी के दुर्व्यवहार के कारण पीड़ित है तो उसे रोकने की कोशिश करें या पशु-कल्याण केंद्र में सूचित करें। प्रत्येक जानवरों की क्रूरता के खिलाफ़ कानून है, जो कि दोषी व्यक्ति को सजा दिलाती है। इसलिए शिकायत करने के लिए हम सभी स्वतंत्र हैं। जानवरों के कल्याण के बारे में अपने दोस्तों पड़ोसियों को शिक्षित करें। शाकाहारी होने का प्रयास करना चाहिए, इससे भी हर साल 95 प्रतिशत जानवरों को बचाया जा सकता है। हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि प्रकृति के साथ उन जीवों की रक्षा भी करें जो इस प्रकृति की शोभा हैं। वरना वह दिन दूर नहीं जब धरती बिना इसके विरान-सी हो जाएगी।

7. नर हो न निराश करो मन को

प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त द्‌वारा रची गई हैं। जो आज भी जन-मानस में व्याप्त है–

नर हो न निराश करो मन को,
कुछ काम करो कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो।

उपर्युक्त पंक्तियों में सदैव कार्यशील होने की प्रेरणा मिलती है। मन को निराशा के वेग से हटाकर कुछ ऐसे काम करने की प्रेरणा मिलती है जिससे हमारा नाम, हमारा जीवन व्यर्थ न हों। मानव होने का सच्चा अर्थ यही है–अपने उद्‌देश्य व मकसद के साथ चलते रहना। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है, उसके पास मन है तो विवेक भी है। मन यदि भटकता है, विषम-से-विषम परिस्थितियों में भी जो मनुष्य धैर्य नहीं खोता, हिम्मत नहीं हारता, वह अपने विवेक के बल पर अपने विश्वास को कभी कम नहीं होने देता है। ऐसे ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है। जीवन में संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे में यदि वे हार मान ले तो उसकी स्थिति एकदम हीन हो जाती है। आशावादी मनुष्य असंभव को संभव बना देता है। जिसने अपने मन को जीत लिया, सफलता उसी के कदम चूमती है।

8. भारत में पर्वों का बदलता स्वरूप

भारत त्योहारों का देश है। होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस, दशहरा इत्यादि हमारे प्रमुख त्योहार हैं। हमारा भारत इन रंग-बिरंगे त्योहारों के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्‌ध है। आज़ादी से लेकर आज तक न जाने कितने त्योहार आए और वक्त के साथ-साथ इनका स्वरूप बदलता गया। होली पुराने समय में पाँच-छह दिन पहले से ही शुरू हो जाती थी। छतों पर बच्चे बाल्टी में रंग भरकर

रास्ते से गुजरते हर इनसान को नहला देते। खाने को पकवान भी कई दिनों पहले से बनने लगते और रिश्तेदारों में भी बाँटा जाता। आज उस हँसी-मजाक का स्थान बोतल में भरे रंगों पिचकारियों आदि ने ले लिया है। गाँव, मोहल्ले के साथ खाते पकवानों पारंपरिक गीतों का स्थान युवाओं में अब फ़िल्मी गानों पर डीजे और होली पार्टी देने का चलन बढ़ रहा है। दीवाली, क्रिसमस, ईद, दशहरा आदि जैसे त्योहारों का चलन भी कुछ ऐसा ही है। त्योहार आते हैं, लोगों को एक करने के लिए, ये याद दिलाने के लिए हँसी-खुशी से साथ रहने में ही मज़ा है। आज भी त्योहार लोगों को आपस में मिलाते (जोड़ते) हैं, अब त्योहारों में वो सादगी तो नहीं रही पर उल्लास आज भी रहता है। आज की भागम-भाग भरी दुनिया में त्योहार एक थेरेपी का काम करते हैं। इसी बहाने लोग अपने प्रियजनों से मिल पाते हैं। काम की भाग-दौड़ में थोड़ी खुशियाँ बाँट लेते हैं। त्योहार हमारे देश की पहचान है और हमारे लिए जीने का अंदाज़।

9. पाश्चात्य संस्कृति और युवा

'संस्कृति' किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है। जो उस समाज के सोचने-विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला तथा वस्तु-निर्माण पद्धति आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के द्वार दीर्घकाल तक अपनाई गई पद्धतियों का परिणाम होता है। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। सभ्यता मनुष्य के भौतिक-क्षेत्र की प्रगति सूचित करता है। हमारे देश की संस्कृति को भारतीय अथवा पूर्वी संस्कृति के नाम से जाना जाता है और यूरोप, अमेरिका आदि देशों की संस्कृति को पाश्चात्य अथवा पश्चिमी संस्कृति के नाम से जाना जाता है। पाश्चात्य संस्कृति का हमारे युवाओं पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा है। एक समय था जब हमारे युवाओं के आदर्श, सिद्धांत, विचार, चिंतन और व्यवहार सब कुछ भारतीय संस्कृति के रंग में रँगे थे। वे स्वयं ही अपनी संस्कृति के संरक्षक थे। परंतु आज उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति के चकाचौंध से भ्रमित युवावर्ग को भारतीय संस्कृति के अनुगमन में पिछड़ेपन का एहसास होने लगा है। जिस युवापीढ़ी के ऊपर देश के भविष्य की जिम्मेदारी है, जिसकी ऊर्जा से रचनात्मक कार्य सृजन होना चाहिए उसकी पसंद में नकारात्मक दृष्टिकोण हावी हो चुका है। आज के युवा के सकारात्मक सोच को बढ़ावा देनी होगी। युवा हमारे परिवार के कुल दीपक, समाज के भावी कर्णधार एवं राष्ट्र के स्वर्णिम भविष्य हैं। अतः हमें उन्हें भारतीयता के प्रति दात्यित्व को जगाना ही होगा, तभी देश व समाज सुरक्षित रह पाएगा।

10. प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

वे संसाधन जो हमें प्रकृति से प्राप्त होते हैं, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं जैसे—जल, वायु, वन, मिट्टी, पेट्रोलियम, कोयला आदि। पृथ्वी ने हमें जन्म के साथ बहुत-सी साधनों की व्यवस्था की है जो हमारे जीवन जीने में मदद करती है लेकिन हमने कभी भी इन संसाधनों की कद्र ही नहीं की। विकास के नाम पर पृथ्वी पर आज जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय किया जा रहा है, उसके कारण न केवल इन संसाधनों के स्रोत समाप्त हो रहे हैं, बल्कि प्रदूषण में वृद्धि, प्रदूषण जनित बीमारियों का प्रसार, सूखा मरुस्थलों का विस्तार, से प्राकृतिक

असंतुलन जैसी विभिन्न समस्याएँ भी अपने पैर पसार रही हैं। यहाँ तक कि प्राकृतिक संसाधनों के दुरूपयोग में वृद्धि एवं बढ़ते प्रदूषण के कारण प्राकृतिक आपदाओं के रूप में पृथ्वी पर कई प्रकार के उलट-फेर भी हो रहे हैं। सुनामी और भूकंप द्वारा मचाई गई तबाही एवं जान-माल की हानि के संबंध में विशेषज्ञों की आम राय है कि इनसे उबरने में इस देश को कई वर्ष लग जाएँगे। प्रकृति अपनी चेतावनी बार-बार देकर हमें आगाह कर रही है। कई शहरों में तो जल-संकट जैसी समस्याएँ भी सामने आ रही हैं। वह दिन दूर नहीं जब हम जलविहीन होकर जीवन का त्याग करेंगे। अतः मानव जाति के उज्ज्वल भविष्य और कल के संरक्षण के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि इस पर गहराई से विचार किया जाए। प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन पृथ्वी पर नाना प्रकार के वस्तुओं का भंडार है, हमें उन्हें बचाने की संकल्प लेनी होगी, तभी हम और ये प्रकृति सुरक्षित रह पाएँगे।

11. संघर्ष की जीवन की कसौटी है

जीवन का दूसरा नाम हैं—संघर्ष अर्थात जीवन एवं संघर्ष एक-दूसरे के पर्याय हैं। कहने का आशय है कि जब तक जीवन है,तब तक संघर्ष है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य को जीवित रहने के लिए संघर्ष से गुजरना पड़ता है। बिना संघर्ष किए किसी को अपनी मंज़िल, अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता। संघर्ष वस्तुतः मनुष्य के दृढ़ संकल्प-शक्ति का प्रतीक है। अपने निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास एवं आने वाली बाधाओं से जूझना ही संघर्ष है। बिना संघर्ष किए किसी को भी वांछित सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एवं अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अनेक संघर्षों से होकर गुज़रना पड़ता है। बिना संघर्ष किए सफलता की प्राप्ति नहीं हो सकती। यह संघर्ष ही मनुष्य के जीवन का आधार है, जिस पर वह सफलता की अपनी इमारत खड़ी कर सकता है।

12. अखबार की दुनिया

आज विश्व में अखबार यानि समाचार-पत्रों का प्रकाशन सर्वाधिक प्रचलित और प्रभावी संचार साधन माना जाता है। हिंदुस्तान का सबसे पहला समाचार-पत्र 'इंडिया गजट' नाम से निकला था। तब से मुद्रण तकनीक के विकास के साथ-साथ समाचार-पत्रों का प्रकाशन तथा जन-वितरण आजतक निरंतर प्रगति के पथ पर है। आज अंग्रेज़ी तथा हिंदी भाषा के अतिरिक्त प्रायः सभी क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार-पत्रों का प्रकाशन काफी जोरों पर है। ये समाचार-पत्र राजनीतिक, समाजिक, व्यावसायिक क्षेत्र को अद्यतन सूचनाएँ देकर जनमत तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। एक तरह से इन समाचार-पत्रों को समय की आँख और समाज की नब्ज़ भी कहा जा सकता है। समाचार-पत्र जन-जीवन की वास्तविकताओं को उजागर करके सत्ता की नीतियों का आँकलन कर समाज के सामने प्रस्तुत करता है। पाठकों के लिए समाचारों का चयन भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक प्रकार से देखा जाए तो स्वस्थ पत्रकारिता के माध्यम से वे जनता और सत्ता के बीच एक मज़बूत कड़ी की भूमिका निभाते हैं।

13. बढ़ते एकल परिवार

आजकल अधिकतर भारतीय परिवार एकल परिवार के स्वरूप बन चुके हैं। भारत में परिवार का आशय संयुक्त परिवार से ही

माना जाता था। 21वीं सदी के शुरुआती दौर में ही हमारे देश से संयुक्त परिवार प्रणाली का ह्रास होना शुरू हो गया। संयुक्त परिवार तेज़ी से टूटकर एकल परिवार का रूप लेने लगे। घर से बाहर दूसरे शहरों या राज्यों में नौकरी, व्यवसाय आदि के कारण एकल परिवार को तेज़ी से प्रोत्साहन मिला, जिनकी मुख्य वजह थी, गाँवों में रोज़गार के अवसरों की कमी। आजीविका के लिए अपने घर को छोड़कर लोगों को बाहर निकलना पड़ा। कहीं-कहीं परिवार के टूटने के बड़ा कारण युवाओं की संकीर्ण मानसिकता भी है। अपनी स्वार्थ व स्वतंत्रता के वशीभूत हो जाने के कारण भी कुछ घरों का विघटन होता गया। एकल परिवार के अनेक फायदे भी हैं। एक तरफ जहाँ संयुक्त परिवार में आर्थिक बोझ बढ़ जाता है। कमाने वाले बहुत कम होते हैं, जबकि खर्च करने वालों व खाने वालों की संख्या अधिक होती हैं। एकल परिवार के उदय से हटकर अगर देखें तो व्यक्ति को किसी-न-किसी आर्थिक कार्य में संलग्न होने में वृद्धि हुई है। वहीं संयुक्त परिवार से अलग होकर बच्चे के पालन-पोषण में एकल परिवारों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। रामायण, गीता आदि के उपदेशात्मक कहानियाँ जहाँ बच्चे अपने परिवार में सीख लिया करते थे। वहीं अब उन्हें यह भी पता नही होता कि रामायण में श्रीराम और भक्त हनुमान कौन थे। अगर विवरणों द्वारा कहा जाए तो एकल परिवार एक विवशता का ही परिणाम है।

14. यात्रा जिसे मैं भूल नहीं पाता

कुछ वर्ष पहले हम सभी मित्रों द्वारा एक यात्रा की योजना बनाई गई। हम सभी दोस्तों ने शरद कालीन अवकाश में शिमला जाने को सुनिश्चित किया। शिमला बर्फ की गोद में बसा एक शहर है। जैसे हम शिमला पहुँचे वहाँ चारों ओर बर्फ-ही-बर्फ। ऐसी लुभावनी और रोमांचकारी दृश्य हम लोगों ने कभी सपने में भी नहीं देखी थी। बच्चे बर्फ में कमी इधर तो कमी उधर घूमते और कभी-कभी तो बीच में भी गिर पड़ते। हम सभी मित्र भी बर्फ में काफी देर खेलते रहे। हम घूमते-घूमते जंगल की तरफ निकल गए। तभी अचानक किसी जंगली जानवरों की आवाज़ से हम सभी डर गए। मेरे एक मित्र का पैर फिसल गया और वह नीचे एक खाई में जा गिरा। हम सबने उसे बचाने की काफी कोशिश की, लेकिन वह गहरी खाई में जा गिरा। हम लोगों ने झटपट से वहाँ स्थानीय लोगों से मदद माँगी और उसे अस्पताल लेकर आए। उसकी हालत इतनी गंभीर थी कि हम सभी जल्द-से-जल्द वहाँ से वापसी का कार्यक्रम बनाया और वापस अपने शहर आ गए। मेरे मित्र की हालत काफी समय तक स्थिर रही लेकिन अब वह स्वस्थ है। उस घटना का वर्णन जब भी हमारे मन में आता हम सब आज भी घबरा जाते हैं।

15. अंतरिक्ष में मेरा घर

एक दिन बैठे-बैठे मैं सोच रहा था कि यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता तो कितना मज़ा आता। सभी ग्रहों के बीच, सूर्य, चाँद और सितारों के बीच कितना आनंद आता। यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता तो घर बैठे समस्त अंतरिक्ष को जान लेता। मैं सभी ग्रहों को बगैर कोई दूरी तय किए पास में देख लेता। चाँद को छूकर देखता, मंगल और बुद्ध से भी मिलता। यह सब सोचभर से रोमांचित हो उठा। तभी मुझे ध्यान आया कि क्या अंतरिक्ष है? किसी ब्रह्मांडीय पिंड जैसे

पृथ्वी से दूर जो शून्य दिखाई देता है, उसे अंतरिक्ष कहते हैं। अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण नहीं होने के कारण कोई ऐसा धरातल नहीं मिल पाता जिसमें कि मैं खड़ा हो सकता या टिक सकता। वैसे भी जितना भोजन व पानी और अन्य आवश्यक वस्तुएँ पृथ्वी पर मिलती हैं, वह अंतरिक्ष में कहाँ संभव है। अब मेरे विचारों की दिशा बदल चुकी थी। वहाँ न कोई बाज़ार और न ही कोई दुकानें होंगी और न ही कोई रौनक। अंतरिक्ष से मेरी यह पृथ्वी ही भली है, जहाँ मेरे मित्र और मेरा परिवार है। अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण नहीं होने के कारण यात्री भोजन में नमक या मिर्च भी छिड़क नहीं सकते वरना वह तो हवा में यहाँ-वहाँ हो जाएँगे। इसलिए अंतरिक्ष में जीवन नहीं है। वहाँ की कल्पना करना ही गलत है। पृथ्वी ही उस अंतरिक्ष से भली है। दिल बहलाने के लिए अंतरिक्ष का यह ख्याल ख्याल, तक ही अच्छा है।

16. लड़का-लड़की एक समान

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो कि समाज में रहता है। इसके दो प्रकार पाई जाती हैं—लड़का और लड़की। समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए दोनों की ही समान रूप से भागीदारी जरूरी है। इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी है, लोगों की सोच में बदलाव। इतिहास गवाह है कि प्राचीन काल से ही लड़कियाँ अपनी शक्ति का परिचय देती आ रही हैं। वे किसी लड़के से कम नहीं हैं। लोगों की संकुचित सोच ने ही लड़कियों को लड़कों से पीछे समझा हुआ है। लड़कियाँ आज हर क्षेत्र में आगे हैं। वे घर-समाज व देश का नाम रौशन कर रही हैं। अगर परिवार को आगे चलाने के लिए लड़का जरूरी है तो परिवार को बढ़ाने के लिए लड़की। लड़कियों को समानता देने की शुरुआत घर से ही होनी चाहिए। उन्हें घर के हर निर्णय में भागीदारी देनी चाहिए। उन्हें लोगों के संकुचित सोच से लड़ने के लिए तैयार करना चाहिए कि वे लोगों की सोच को बदल सकें और लड़का-लड़की का भेद-भाव खत्म कर सकें। आज लड़का-लड़की में भेदभाव करना कानूनन अपराध माना जाता है। खुद भी इस अन्याय से बचें और समाज को भी मार्गदर्शन देना चाहिए। तभी लड़का-लड़की एक समान वाली क्रांति देश में आएगी और समाज सुरक्षित व स्वस्थ रह पाएगा।

17. जंक फूड और बिगड़ता स्वास्थ्य

' जंक फूड' उस भोज्य-सामग्री को कहा जाता है, जिसमें अधिक मात्रा में खराब पोषण वाली चीज़ें जैसे—वसा, चीनी, सोडियम के रसायन आदि पाए जाते हैं। आमतौर पर जंक फूड को स्वादिष्ट एवं आकर्षित बनाने के लिए उसमें कई खाद्य-पदार्थों और रंगों को डाला जाता है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। संपूर्ण विश्व में दिनोंदिन जंक फूड का चलन बढ़ता जा रहा है। बाज़ार में मिलने वाली अधिकतर चीज़ें जंक फूड की सूची में शामिल होती हैं। जिन खाने की चीज़ों के लिए बच्चे ज़िद करते हैं, उनमें से ज़्यादातर चीज़ें जंक फूड की श्रेणी में आते हैं। इसकी सूची में हैं—बर्गर, फ्रेंच फ्राइस, कोका कोला, चिप्स, पीज़्ज़ा, केक, हॉट डॉक, डोनट्स, पैनकेक्स इत्यदि। निरंतर इन पदार्थों का सेवन करने से बढ़ते वजन, मोटापा की समस्या, हृदयरोग, मधुमेह आदि के हम शिकार हो जाते हैं। स्वस्थ जीवन के लिए इन जंक फूड के सेवन से बचना होगा और हमें इसके प्रति सचेत होना पड़ेगा। जो भोजन हमारी

संस्कृति से नहीं आई, वह भोजन हमारे लिए कैसे हितकर हो सकता है। पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते-अपनाते आज हमारी वस्तु-स्थिति न भारतीय रही न ही विदेशी। यह विषय विचारणीय है। सर्वप्रथम जंक फूड के सेवन से हमें बचना होगा तभी हम और हमारा समाज स्वास्थ रह सकता है।

18. समाज में नारी का स्थान

किसी भी देश की सभ्यता संस्कृति एवं उन्नति का मूल्यांकन वहाँ के नारी वर्ग की स्थिति को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। जो राष्ट्र नारी को केवल भोजन पकाने एवं बच्चे पैदा करने का साधन समझते हैं, वे दुर्भाग्यवश अभी सभ्यता, संस्कृति एवं शिष्टता की दौड़ में बहुत पीछे हैं। प्राचीन युग में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में समान रूप से भाग लेने की आधिकारणी थीं। द्वापर युग आने पर अविश्वास उत्पन्न हुआ। मध्यकाल भारी पतन का काल था लेकिन आधुनिकता ने पुनः नारी को खोया वजूद वापस दिलाया। आज नारी ने परिवार में ही नहीं अपितू राष्ट्र के हर गाँव, हर शहर में अपने महत्व को तथा अपने होने का अहसास दिलाया है। आज नारी सफलता की उस मंजिल पर है, जहाँ कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। भारतीय संविध ान में भी नारी को समान अधिकार दिए गए हैं। आज 21वीं सदी में नारी, पुरुष से कंधे-से-कंधा मिलाकर समाज के निर्माण में जुटी हुई हैं। आज नारी स्वतंत्र होकर समाज व देश को सबलता प्रदान कर रही है।

19. यदि मैं शिक्षा मंत्री होता

मनुष्य के मन की उड़ान ही उसे ऊँचाई की ओर प्रेरित करती है। मनुष्य पहले कल्पनाएँ करता है, उसके बाद उन्हें साकार करने की चेष्टा करता है। यदि मनुष्य ने हज़ारों वर्ष पूर्व कल्पना न की होती तो आज वह अंतरिक्ष में विचरण नहीं कर रहा होता। वह कभी चंद्रमा पर विजय पताका फहराने में सक्षम नहीं हो पाता। बचपन से ही मनुष्य बड़ा होकर कुछ बनने या करने की कल्पना करता है। देश में खराब शिक्षा पद्धति को देखते हुए मुझे कभी-कभी लगता है यदि मैं शिक्षामंत्री होता तो सर्वप्रथम शिक्षा को व्यापार का रूप देने वाले लोगों को प्रेरित करता। अपनी निजी स्वार्थ के कारण देश के भविष्य को आघात पहुँचाने वाले ये व्यापारी किसी देशद्रोही से कम नहीं हैं। शिक्षा के स्तर को बनाए रखना, नयी खोजपूर्ण शिक्षा करते रहना, जिससे भारत विश्व-पटल पर अव्वल रहे। छोटे बालकों को बस्ते के बोझ से मुक्त कर देता। उन्हें सिर्फ़ किताबी ज्ञान नहीं बल्कि व्यावहारिक और आध्यत्मिक ज्ञान की ओर भी अग्रसर करता। विभिन्न प्रकार के खेद-कूद, योग, कसरत, ध्यान आदि का अभ्यास प्रतिदिन करवाता ताकि उनके स्वास्थ्य व ज्ञानवर्धक कोशिकाओं की वृद्धि हो सके।

20. मेरा जीवन-लक्ष्य

लक्ष्यहीन जीवन की स्थिति उस नाव के समान होती है, जिसे बिना सोचे-समझे ही सागर की गहराइयों में छोड़ दिया जाए तो वह दिशाहीन हो भटकती रहती है। उसका अंत क्या होगा, कोई नहीं जानता। उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी यदि दिशाहीन हो तो वह अनिश्चितता के सागर में गोते खाता रहता है और गंतव्य तक पहुँच नहीं पाता। वैसे तो कई व्यवसाय हो सकते हैं जिससे धन कमाया जा सकता है लेकिन एक आर्मी ऑफिसर द्वारा देश की रक्षा

करना देशवासियों की सुरक्षा का ख्याल रखना, अपने जीवन को भारतमाता के चरणों में अर्पित करना, असीम संतुष्टि प्रदान करता है। जीवन जीने का सही अर्थ यही है दूसरों के लिए जीना, देश पर मर मिटना, जीवन किसी के काम आना, तब समाज ही नहीं बल्कि इतिहास भी याद रखता है। परंतु यह कार्य बिना लक्ष्य के संभव नहीं होता। इसके लिए पढ़ाई के साथ-साथ आराम और सुविधाओं का त्याग करना पड़ता है। एक आर्मी ऑफिसर को ऑफिसर से पहले एक अच्छा और सच्चा इनसान होना चाहिए। विनम्रता, परिश्रमशीलता, लगनशीलता और दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

02 अनौपचारिक पत्र-लेखन

(Informal Letter Writing)

1. आधुनिक खेलों का जीवन में महत्व बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए–

मुंबई

दिनांक : 8 सितंबर, 20XX

प्रिय प्रशांत

सस्नेह नमस्ते,

आशा है कि तुम स्वस्थ होगे। कल अपने मित्र राजेश का पत्र आया था। पत्र पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। उसका भाई अनुमेष अगले सप्ताह अफ्रीका अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच खेलने जा रहा है और छोटा भाई भी पिछले साल हॉकी टूर्नामेंट खेलने अमेरिका गया था। मेरा भाई भी शतरंज बहुत अच्छा खेलता है। वह भी अपने विद्यालय में काफी चर्चित है। आज का आधुनिक युग कई आधुनिक खेलों के साथ भविष्य-निर्माण का भी सुनहरा अवसर प्रदान करता है। आज अपने देश के लिए खेलने वाले खिलाड़ी किसी नेता, अभिनेता से कम नही हैं। मेरी छोटी बहन भी हॉकी खेलना चाहती है। विद्यालय द्वारा आयोजित वार्षिक खेल प्रतियोगिता में उसने अपना स्थान भी बनाया था। मैं चाहता हूँ कि वह भी महिला टीम में चयनित हो और देश का नाम रोशन करे। हमें गर्व होता है जब हम इनके नाम से जाने जाते हैं। शेष सब कुशल है।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

प्रकाश

2. पत्रिका में मित्र का लेख प्रकाशित होने पर उसकी सराहना करते हुए पत्र लिखिए–

मुंबई

दिनांक : 3 सितंबर, 20XX

प्रिय वरुण

सस्नेह नमस्ते,

आज ही आर्यन ने दूरभाष पर बताया कि तुम्हारा लेख पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। सर्वप्रथम मेरी ओर से बहुत-बहुत भलाई। पहले भी विद्यालय में तुम लेख, निबंध, कहानी, वाद-विवाद प्रतियोगिता में सफल रहते आ रहे हो। लेकिन पत्रिका में लेख का प्रकाशित होना, जन-जन तक तुम्हारे लेख के माध्यम से तुम्हारे विचारों का पहुँचना, बहुत बड़ी सफलता है।

प्रिय मित्र! अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी हार्दिक शुभकामना स्वीकार करो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हें जीवन के हर क्षेत्र में सदैव सफलता प्रदान करें। इसी प्रकार तुम उन्नति के शिखर

पर आगे बढ़ते रहो। अगले खत के साथ पत्रिका में छपे अपने लेख की छाया प्रति भेजना नहीं भूलना। अपनी इन सफलता को विनम्रता से आगे बढ़ाना। मेरी शुभकामनाएँ सदैव तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
अतुल

3. आपके विद्यालय में चलाए गए सफ़ाई अभियान और उसमें होने वाली गतिविधियों का वर्णन करते हुए बड़ी बहन को पत्र लिखिए–

गाजियाबाद
दिनांक : 8 अगस्त, 20XX

आदरणीय दीदी
चरण स्पर्श,

आपकी याद सदैव आती रहती है। आशा है आप कुशलतापूर्वक होंगी। मम्मी-पापा भी आपको सदैव याद करते रहते हैं। आपके जाने के बाद मैं माँ के कामों में भी मदद करता हूँ। इन दिनों मेरे विद्यालय में भी सप् ाई अभियान की कई प्रकार की गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जो अभियान चलाया है, वह सच होता प्रतीत हो रहा है। कक्षा, मैदान से लेकर सड़कों तक की सप् ाई का कार्य हम सभी विद्यालय के छात्रों को ही करनी होती है। बीच-बीच में हमें गाँव की गली-गली की सफ़ाई करने व नुक्कड़ नाटकों द्वारा लोगों को सफ़ाई से होने वाले फायदों का अनुभव कराया जाता है। 'स्वस्थ भारत' का स्वप्न हम सब साथ मिलकर ही पूरा कर सकते हैं। जो स्वप्न हमारे बापू (महात्मा गांधी) ने देखी थी। हमें अपने घर, मुहल्ले, गली, सड़कें साफ़ करने में ज़रा भी शर्म नहीं करनी चाहिए बल्कि गर्व होना चाहिए। हम भारतवर्ष के वासी हैं, जिसे कभी सोने की चिड़िया भी कहा जाता था। मेरी पढ़ाई भी साथ-साथ बहुत अच्छी चल रही है। अब आगे की गतिविधियों का जिक्र अगले खत में।

आपका आज्ञाकारी अनुज
क०ख०ग०

4. छोटे बच्चों को होटलों, ढाबों में काम करते देख आपको कैसा लगता है? मित्र को पत्र लिखकर अपने विचार साझा कीजिए–

दिल्ली
दिनांक : 7 जुलाई, 20XX

प्रिय मित्र आशीष
सप्रेम नमस्ते,

आशा है तुम स्वस्थ होगे और तुम्हारे घर पर भी सभी लोग स्वस्थ होंगे। तुम्हारा खत मिला, पढ़कर प्रसन्नता हुई कि तुम अपने परिवार के साथ पूणे गए थे। परिवार के साथ घूमने जाने का आनंद ही अद्भुत है। मैं भी पिछले महीने अपनी मम्मी-पापा और बहन के साथ घूमने गया था। आज भी उन दिनों को याद करता हूँ तो बहुत आनंद मिलता है। उन दिनों की एक याद जो मुझे बार-बार परेशान करती है वह है—हम लोग जहाँ भी होटल या ढाबों में रूके वहाँ मुझसे कम उम्र के बच्चे काम कर रहे थे। मुझे यह देखकर बहुत बुरा लगा। जब मैंने उनसे बातें की तो मुझे एहसास हुआ कि उन्हें भी पढ़ने-लिखने की चाह है, उन्हें भी स्कूल व कॉलेजों में जाने की इच्छा है। लेकिन उनकी गरीबी उनकी सारी इच्छाओं को नष्ट कर दे रही है। आजीविका चलाने की बोझ उस छोटी-सी उम्र में देख मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए। क्या दुनिया में सभी लोग खुशहाली से नहीं जी सकते हैं। क्यूँ ये गरीबी और अमीरी। क्या ऊपर वाले सबको एक समान नहीं बना सकते? कई ऐसे प्रश्न हैं जो मेरे दिमाग में चलते रहते हैं। मैंने तो सोच लिया

है कि मैं बड़ा होकर गरीब बच्चों की संस्था चलाऊँगा जहाँ वे स्कूल जा सकें सामान्य जीवन व्यतीत कर सकें।

तुम्हारा मित्र
विनय

5. छोटे भाई को कुसंगति की हानियाँ बताते हुए पत्र लिखिए–

दिल्ली

दिनांक : 1 जून, 20xx

प्रिय गौरव

शुभाशीष

आज ही पिता जी का पत्र मिला। पत्र से ज्ञात हुआ कि आजकल तुम पढ़ाई पर ध्यान न देकर बुरे मित्रों की संगति में अपना समय बर्बाद कर रहे हो। पिता जी के द्वारा चिंता करना स्वाभाविक है। गौरव तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि कुसंगति पैरों में पड़ी वह बेड़ी है, जिसमें जकड़कर मनुष्य की प्रगति पंगु हो जाती है। मनुष्य की सही पहचान उसके मित्र ही होते हैं। यदि तुम बुरे मित्रों के साथ रहोगे तो उनके दुष्प्रभावों से बच नहीं सकोगे। समय बहुत मूल्यवान है मेरे भाई। बीता समय फिर लौटकर नहीं आता। "अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत" वाली उक्ति तो तुम्हें ध्यान में होगी। इसलिए समय रहते ही सँभल जाने में तुम्हारी भलाई है। जिन्हें तुम मित्र समझ रहे हो, वे वास्तव में तुम्हारी भूल है। अभी भी देर नहीं हुई, मेरे भाई। परीक्षाएँ तीन महीने बाद शुरू होने वाली हैं। तुम समझदार हो, पिता जी के द्वारा कही गई बातों पर अमल करना। मुझे पता है तुम मुझे कभी निराश नहीं कर सकते। माता जी और पिता जी का ध्यान रखना। नियमित रूप से स्कूल जाना और परीक्षा की तैयारी करना।

तुम्हारा भाई
राजकुमार

6. प्रदूषण की समस्या हल करने में अपने योगदान की चर्चा करते हुए मित्र। सखी को पत्र लिखिए–

पहाड़गंज

दिल्ली

दिनांक : 10 जुलाई, 20xx

प्रिय मित्र

सस्नेह नमस्ते

तुम्हारा पत्र मिला। जानकर दुख हुआ कि इन दिनों तुम श्वास की तकलीफ़ से परेशान हो। जब तक गाँव में थे, कभी तुम्हे इस तरह की परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ा। जबसे तुम दिल्ली गए हो तब से ही तुम परेशान हो, कारण कहीं-न-कहीं दिल्ली की प्रदूषण है। आज के विज्ञान-युग में प्रदूषण की समस्या हर शहर के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है। धरती का वायुमंडल इतना विषैला हो गया है कि अब प्रकृति अपना संतुलन हो बैठी है। जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण के भी दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं।

आज सरकार द्वारा स्कूलों व कॉलेजों द्वारा कई ऐसे समाधान किए जा रहे हैं और जन-जन तक इस विषय को पहुँचाया जा रहा है कि अगर आज हम नहीं सुधरे तो प्रकृति न जाने अपना कौन सा विकराल रूप दिखाएगी। हर व्यक्ति को प्रतिवर्ष अपने घर में पेड़-पौधे लगाने चाहिए। आस-पास में पेड़ों को काटने पर रोक लगाना चाहिए। मैं तो अपने सोसाइटी में प्रतिवर्ष प्रत्येक घर से एक पेड़ लगाने को प्रेरित करता हूँ और खुद भी लगता हूँ। इस प्रदूषण से बचने का एकमात्र उपाय पर्यावरण ही है। जब तक हम खुद कदम नहीं उठाएँगे तब तक कोई विकास की सोच विकसित नहीं हो सकती।

तुम्हारा मित्र
रवि

7. परीक्षा की नई मूल्यांकन पद्धति (ग्रेडिंग सिस्टम) की जानकारी देते हुए पिता जी को पत्र लिखिए–

दिल्ली

दिनांक : 9 जनवरी, 20XX

आदणीय पिता जी

चरण स्पर्श

मैं कुशल हूँ और परीक्षा की तैयारी भी बहुत अच्छी चल रही है। मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ कि 10वीं की परीक्षा में अच्छे ग्रेड ला सकूँ। अब तो परीक्षा पद्धति व मूल्यांकन पद्धति में एक साथ भी कई परिवर्तन आए हैं, जिसमें विद्यार्थियों पर ज़्यादा दबाव नहीं दिया जाता। अब परीक्षा की नई मूल्यांकन पद्धति ग्रेडिग सिस्टम पर आधारित होता है। क्यूमूलेटिव ग्रेड (CGPA) एक Eduction Grading System होता है, इसका प्रयोग इन दिनों स्कूल और कॉलेज में किया जाता है। इसका उपयोग छात्र की शैक्षणिक प्रस्तुति मापने के लिए किया जाता है। मान लीजिए आपका CGPA (8.4) आया है, तो इसे 9.5 से गुणा करना होगा। EX-8.4 X 9.5 . 79.80% कुछ इस तरह से। इसलिए मैं निरंतर अपना कार्य लगनपूर्वक कर रहा हूँ। पिता जी मुझे विश्वास है कि मेरा CGPA 9.8 तक जरूर आएगा। आपके समय में ये मूल्यांकन पद्धति नहीं थी। इसलिए आप सभी पर परीक्षा का दबाव ज्यादा था। अब पद्धति में बहुत बदलाव आया है। साथ ही मैं अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रख रहा हूँ। आपलोग चिंतित नहीं होंगे। मुझे सदैव याद रहता है, आपने बहुत ही कठिनाईयों का सामना कर मुझे इतने अच्छे विद्यालय में रखा है। मैं अच्छे परिणाम के साथ घर आऊँगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

विनय

8. प्रगति मैदान में लगे पुस्तक मेले का वर्णन करते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए–

परीक्षा भवन

दिल्ली

दिनांक : 10 अगस्त, 20XX

प्रिय विनय

शुभ आशिर्वाद

यहाँ मैं कुशलपूर्वक हूँ। आशा है वहाँ परिवार में सभी कुशलपूर्वक होंगे। तुमने अपने पिछले पत्र में दिल्ली के पुस्तक मेले के विषय में पूछा था। विनय, इसी के बारे में तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ। दिल्ली के प्रगति मैदान में होने वाला यह 'पुस्तक मेला' 26 अगस्त, 20XX को प्रारंभ होने जा रहा है जो 3 सितंबर, 20XX तक चलेगा। हमारी सरकार युवाओं में पढ़ने की रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष इस मेले का आयोजन करती है। यह मेला पुस्तकों एवं लेखकों के विषय में भी हमारा ज्ञानवर्धन करता है। इस मेले में न केवल राष्ट्रीय अपितु अंतरराष्ट्रीय पुस्तकों का भी एक बड़ा संग्रह देखने को मिलता है। अनेक बड़े-बड़े प्रकाशन संस्थान यहाँ कम दामों में अपनी पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाते हैं। मैं जानता हूँ कि तुम्हें किताबों के संकलन और उन्हें पढ़ने का बहुत शौक है। ऐसे में तुम्हारे लिए लाभ उठाने का यह उत्तम समय है। तुम शीघ्र ही यहाँ आने का कार्यक्रम बनाकर मुझे पत्र द्वारा सूचित करना। बहुत समय बाद हमें एक साथ समय बिताने का अवसर प्राप्त होगा। मैं अभी से आनंद महसूस कर रहा हूँ। माता-पिता जी को मेरा प्रणाम कहना और बहन आकांक्षा को प्यार।

तुम्हारा अग्रज

क॰ख॰ग॰

9. पढ़ाई में प्रोत्साहन हेतु पिता द्वारा पुत्र को पत्र लिखिए–

दिल्ली

दिनांक : 6 जून, 20XX

प्रिय राहुल

शुभाशिष

यहाँ सब सकुशल हैं। तुम्हारी कुशलता की चिंता तुम्हारी माँ को लगी रहती है। कल छात्रावास से तुम्हारे मित्र, अमन का खत उसके पिता को मिला, जिसमें उसने तुम्हारे प्रति चिंता व्यक्त की थी। तुम्हारी संगति अच्छे मित्रों के साथ नहीं है, इसलिए वह तुम्हारी पढ़ाई को लेकर बहुत चिंतित था। बेटा जब से यह खबर तुम्हारी माँ ने सुना है, तब से वह बहुत परेशान है। तुम्हें छात्रावास मैंने इसलिए भेजा था कि तुम अपनी पढ़ाई तन्मयता से पूरी कर सको। अध्ययनशील व्यक्ति ही जीवन में कुछ बन सकता है। अध्ययन केवल तुम्हारी ज्ञान-वृद्धि ही नहीं करता, बल्कि तुम्हें सही रास्ता दिखाकर कुसंगति से भी बचाता है। अध्ययन का अपना एक अलग ही आनंद है। अध्ययन हमें आम लोगों की श्रेणी से उठा देता है। अध्ययनशील व्यक्ति जीवन में तरक्की करते हैं और उच्च स्थान को प्राप्त करते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम निश्चित ही मेरे द्वारा कही बातों पर अमल करके अध्ययनशील बनोगे। आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि तुम मुझे कभी निराश नहीं करोगे। हमेशा खुश रहो।

तुम्हारा पिता

क॰ख॰ग॰

10. अपनी दीदी और जीजा जी को विवाह की प्रथम वर्षगाँठ पर बधाई देते हुए पत्र लिखिए–

दिल्ली

दिनांक : 10 अगस्त, 20XX

आदरणीय दीदी और जीजा जी

सादर प्रणाम

शादी की प्रथम वर्षगाँठ की हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप दोनों का वैवाहिक जीवन सुख-समृद्धि से सदैव भरा रहे। आप दानों की याद हमेशा आती रहती है। मम्मी-पापा ने भी दिल से बधाई लिखने को कहा है। दीदी एक वर्ष बीत गए अब आप और जीजा जी दिल्ली मुझसे मिलने आने का कार्यक्रम बनाओ, आप दोनों को देख मुझे अपार हर्ष होगा। विवाह उपरांत आपके साथ आपके नए घर की अनुभूति आज भी मुझे याद है। आपका घर बहुत ही सुंदर था, उससे भी ज्यादा सुंदर थे वहाँ के लोग। जो प्यार, इज़्ज़त व सम्मान से भरे थे। मुझे बहुत खुशी है दीदी, आपको वहाँ कभी भी हमलोगों की याद व कमी महसूस नहीं होती होगी। पुनः आप दोनों को विवाह की प्रथम वर्षगाँठ की बहुत-बहुत बधाई देते हुए।

आपका प्रिय अनुज

रवि

11. बड़ों के प्रति आदर-सम्मान रखते हुए उनके जीवन के अनुभवों से प्रेरणा लेने की सीख देते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए–

मुंबई

दिनांक : 20 अगस्त, 20XX

प्रिय अनुज

शुभ प्यार

पिता जी का खत आज ही मिला, पढ़कर दुख हुआ कि तुम स्कूल से आने वे बाद भी, अपने दोस्तों के साथ बाहर खेलते रहते हो। माँ-पापा की अब उम्र हो चुकी है, वहाँ दादा जी का भी स्वास्थ्य उत्तम नहीं रहता। तुम उनकी कामों में मदद करना तो दूर तुम उनकी आज्ञा का भी उलंघन करते हो। जो हमें दिए गए संस्कारों के विपरीत है। वृद्ध

ावस्था आते ही मनुष्य की इंद्रियाँ शिथिल होने लगती है। बढ़ती उम्र की इस अवस्था में वे नवीन पीढ़ी से सहयोग सहायता की अपेक्षा रखते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके पास जीवन को जीने का अनुभव है। उनका अनुभव भी बड़ा होता है नवीन पीढ़ी को चाहिए कि वह अपने बड़ों का आदर-सम्मान करें। ये पड़ाव जीवन में सबके आने हैं। यही जीवनचक्र है। आज तुम युवा हो, कभी वे भी थे और कभी हम भी वृद्धावस्था में आएँगे। तुमने किताबों में पढ़ा होगा, आज हमने जो बोया है, कल हमे भी वही मिलेगा। मेरे प्यारे अनुज, मैं वहाँ नहीं हूँ, नहीं तो ये सारी बातें मैं तुम्हें यूँ खत लिखकर नहीं समझाता। कुछ वर्षो की बात है, मैं तुम्हें भी अपने साथ यहाँ शहर ले आऊँगा और मिलकर करेंगे हम बड़ों की सेवा। आशा है तुम मेरी बात पर गौर करोगे।

तुम्हारा शुभचिंतक भाई
अर्जुन

12. अपनी किसी पर्वतीय यात्रा के अनुभवों को अपने मित्र को पत्र लिखकर बताइए–

नई दिल्ली
दिनांक : 18 फरवरी, 20XX
प्रिय पंकज
सप्रेम नमस्ते

तुम्हें जानकर बहुत खुशी होगी, इस बार कॉलेज की ओर से हमें शैक्षणिक पर्वतीय यात्रा पर ले जाया गया। पर्वत पर चढ़ने से पूर्व मन नई-नई प्रश्नों को जन्म दे रहा था। पर्वत के ऊपर जीवन है या नहीं? पर्वत से पानी कैसे गिरता है? पर्वतीय जीवन कैसा होगा? सुना था आदिवासियों की जातियाँ पर्वत पर या वहाँ बसे जंगलों में निवास करती हैं काफी सारे प्रश्नों की सूची हमने तैयार की थी? आदि। मार्गदर्शन के लिए आचार्य और आचार्या भी साथ थे। ये यात्रा बिहार राज्य के राजगीर-नालंदा के ओर की थी। यात्रा रोमांच से भरा हुआ था। गोल-गोल रास्ते जलेबी की तरह, घिरी झाड़ियाँ, हम सब उत्साहित थे, रास्ते अब मंजिल के नज़दीक आ चुकी थी। कुछ ही पल में हम सभी अपने मंजिल पर पहुँच गए। वहाँ के दृश्य का वर्णन शब्दों में कितना भी करूँ कम होगा। अगले दिन हमलोगों ने चढ़ाई आरंभ की। पहाड़ों पर बसे लोग हमारे जैसे ही थे, लेकिन उनका जीवन हम लोगों के जीवन से बहुत कठोर था। हम सबको चढ़ते-चढ़ते महात्मा बुद्ध का एक मंदिर दिखाई दिया। 'बुद्ध ं शरणं गच्छामि' के स्वर से गुंजायमान वह स्थल अति मनमोहक लगा। वहाँ से किसी का वापस आने का दिल नहीं कर रहा था। वापस पढ़ाई करने की अनुमति आचार्य ने दी। आज भी हमें वह यात्रा बहुत याद आती है। मम्मी-पापा ने कहा है कि अगले साल हम सब साथ चलेंगे। अगर हो सके तो तुम भी हमारे साथ आना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
रोशन

13. विदेश यात्रा पर जाने वाले बड़े भाई को उनकी मंगलमय यात्रा की कामना करते हुए पत्र लिखिए–

नई दिल्ली
दिनांक : 20 फरवरी, 20XX
आदरणीय बड़े भाई सहाब
सादर नमन

मैं कुशल हूँ और आपकी कुशलता की कामना ईश्वर से करता रहता हूँ। आपका पत्र मिला, जानकर अत्यधिक खुशी हुई कि आपको अपने कंपनी द्वारा विदेश यात्रा का सुअवसर प्राप्त हुआ है। आप प्रतियोगिता में भाग लेने कनाडा जा रहे हैं। यह हम सबके लिए गर्व की बात है। मैं ईश्वर से

प्रार्थना करूँ गा कि आप विजयी हों। पिता जी और माता जी का तो कानों पर विश्वास ही नहीं हा रहा था कि आप एक दिन विदेश जाओगे। आपकी दृढ़-निश्चय, लगन व परिश्रम ने आपको यह अवसर प्रदान किया है। मैं भी आपके ही पद-चिह्नों पर चलने का प्रयास कर रहा हूँ। आपका आशीर्वाद रहा तो मैं भी एक दिन अवश्य विदेश जाऊँगा और आप सबको वह खुशी प्रदान करूँगा जो आज आप दे रहे हैं। मेरी ओर से आपके विदेश गमन के लिए सप्रेम अनंत मंगलकामना। आपकी यात्रा मंगलमय हो। वहाँ पहुँचते ही हमें सूचना देंगे। विशेष अगले खत में।

आपका आज्ञाकारी
अनुज
क०ख०ग०

14. विज्ञान मेले में आपके मित्र का बनाया मॉडल चुने जाने पर उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए–

उदयपुर
दिनांक : 8 अगस्त, 20XX
प्रिय मित्र राकेश
सस्नेह नमस्कार

आज तुम्हारा खत मिला जानकर बहुत खुशी हुई कि विज्ञान मेले में तुम्हारे द्वारा बनाए मॉडल को चयनित किया गया, साथ ही तुम्हें बहुत ही प्रोत्साहित भी किया गया। तुम्हारा विज्ञान का जो विषय था वह भी अति प्रेरणादायक था। लोगों ने जो तुम्हें सराहा वह तुम्हारे प्रतिभा का परिचय देता है–'जल क्रिया चक्र' का मॉडल। ध रती पर जल का विभिन्न स्वरूप जिसमें आपके द्वारा जल और बर्फ को दर्शाना इतना भी आसान नहीं रहा होगा। गंदे पानी का पुनः उपयोग कैसे करें। यह भी बहुत महत्वपूर्ण है। तुम शुरुआती दौर से ही विचारणीय रहे हो। जल जैसी अति आवश्यक विषयों पर मॉडल तैयार करना और लोगों तक यह संदेश देना "जल ही जीवन है"। पशु-पक्षी, मानव, पेड़-पौधे बिना जल निर्जीव के समान हैं। मुझे गर्व है कि मित्र तुम पर और अभिमान हो रहा कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ। मॉडल को संभालकर रखना, मैं जब आऊँगा, तब मुझे भी तुमसे देखकर समझना है। मैंने अपने छात्रावास में भी तुम्हारे इस मॉडल के बारे में बताया इस विषय को लेकर सभी उत्साहित हैं। मेरे मित्र! तुम्हारी इस सफलता के लिए हार्दिक बधाई।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
रमेश

15. माँ के अस्वस्थ होने के कारण मित्र के जन्मदिन में न पहुँचने की सूचना देते हुए उस मित्र को क्षमायाचना संबंधी पत्र लिखिए–

बी 203, सेक्टर 30
नोएडा, दिल्ली
दिनांक : 28 जनवरी, 20XX
प्रिय राजीव
सस्नेह नमस्कार

आज ही माँ को अस्पताल से घर वापस लाया हूँ, अभी भी डॉक्टर ने उन्हें विशेष देख-रेख में रहने की सलाह दी है। तुमको पता है पिता जी के नहीं रहने के कारण घर की पूरी जिम्मेदारी मेरे ऊपर ही है। उसमें माँ का अस्वस्थ रहना भी चिंता का एक कारण है। माँ के अलावा मेरा इस दुनिया में है ही कौन? बड़ी बहन विदेश में बसी हैं, उनका बराबर आना-जाना भी संभव नहीं हैं। मैंने इस बार तुम्हारे जन्मदिन में आने हेतु अपना टिकट बहुत पहले ही बुक करवा लिया था। मुझे बेहद अफसोस है कि इस बार तुम्हारे जन्मदिन पर मैं नहीं

आ सका। इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। माँ भी तुम्हें बहुत याद करती है। हमलोगों का बचपन में माँ कितना ख्याल रखती थी। अब मेरी जिम्मेवारी है, माँ को प्रसन्न रखना। तुम्हें अगर वक्त मिले तो माँ से मिलने जरूर आना। तुम्हें देखकर उन्हें बहुत खुशी मिलेगी। जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ, तुम जीवन में हमेशा अग्रसर रहो।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
अविनाश

16. अपनी छोटी बहन को योग तथा प्राणायाम करने की सलाह देते हुए पत्र लिखिए–

हैदराबाद
दिनांक : 10 दिसंबर, 20XX
प्रिय आयुषी
मुस्कुराती रहो

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि अब तुम्हारी तबीयत पहले से अच्छी होगी। कल पिता जी का पत्र मिला, वे भी तुम्हारे लिए बहुत चिंतित थे। तुम अस्वस्थ होने के कारण काफी दिनों से विद्यालय जाने में भी असमर्थ हो। मार्च में तुम्हारी 10वीं की परीक्षा भी आ रही है। तुम्हारा बार-बार इस तरह बीमार पड़ना ठीक नहीं है। तुम्हें अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना होगा। एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। स्वस्थ रहने का अति उत्तम साधन है–योग तथा प्राणायाम, यह वह साधन है, जिसे करने से हमारी शरीर की मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं और रक्त का प्रवाह सुचारु रहता है तथा मन की एकाग्रता भी सुचारु रूप से चलता है। इससे शरीर स्वस्थ्य रहता है और हम जल्दी बीमार नहीं होते। इससे हमारी कार्य करने की क्षमता भी बढ़ती है। आशा करता हूँ कि तुम मेरी इस सलाह को मेरी आज्ञा मानकर पालन करोगी। नियमित रूप से योग और प्राणायाम करोगी। पूज्य माता जी को तथा पिता जी को मेरा प्रणाम कहना। योग व प्राणायाम से हुए फायदे का ज़िक्र अगले पत्र में जरूर लिखना।

तुम्हारा भाई
अमन

17. आपके मित्र के घर में आग लग जाने के कारण सब सामान जल गया है। उसकी सूचना मिलते ही ऐसी स्थिति में उसे सांत्वना-पत्र लिखिए–

नीलकंठ अपार्टमेंट
नई दिल्ली
दिनांक : 15 अक्टूबर, 20XX
प्रिय अभिजीत
सप्रेम नमस्कार

यहाँ सब कुशल है। वहाँ का खबर जानकर बहुत दुख हुआ कि तुम्हारे घर में आग लग जाने की वजह से बहुत नुकसान हुआ। यह एक ऐसा झटका है, जिसे सहना बहुत मुश्किल है। मैं जानता हूँ कि घर की आर्थिक स्थिति को बहुत धक्का लगा होगा, लेकिन इस बात के लिए ईश्वर का धन्यवाद करना होगा कि कोई जान का नुकसान नहीं हुआ। पैसा तो फिर कमाया जा सकता है, घर भी पुनः बस जाएगा, लेकिन जाने वाला इनसान वापस नहीं आता। अभिजीत अभी वक्त है, अपने बड़ों का ख्याल रखने का। तुम अपनी हिम्मत मज़बूत रखना। चाचा जी को मानसिक रूप से संबल प्रदान करना। बुरा वक्त था, टल गया। मैं अगले सप्ताह तुमसे मिलने आ रहा हूँ। मैंने अपने ऑफिस में छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र भी दे दिया है। मैं तुम्हारे किसी काम आ सकूँ यह तो मेरा सौभाग्य होगा। शेष मिलने पर।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
कार्तिक

18. पुरानी मोटरसाइकिल बेचकर नई मोटरसाइकिल खरीदने की अनुमति के लिए अपने पिता को पत्र लिखिए–

दिल्ली

दिनांक : 12 जनवरी, 20XX

आदरणीय पिता जी

चरण स्पर्श मैं ठीक हूँ, आशा है आप सभी भी स्वस्थ्य होंगे। पिता जी इन दिनों मेरी पुरानी मोटरसाइकिल मुझे बहुत परेशान कर रही है। बीच-बीच में रुक जाती है। सदैव कॉलेज जाने में मुझे विलंब हो जाती है। अभी एक स्कीम आई है, पुरानी मोटरसाइकिल देकर नई मोटरसाइकिल पर 30 प्रतिशत की छूट मिल रही है। आपकी अनुमति हो तो क्या मैं पुरानी मोटरसाइकिल देकर और कुछ पैसे जो मुझे कॉलेज से छात्रवृत्ति योजना के तहत मिली है, उसे मिलाकर नई मोटरसाइकिल ले सकता हूँ। आपकी अनुमति की प्रतीक्षा अगले खत तक करूँगा। आप जैसा कहेंगे मैं ठीक वैसा ही करूँगा। बड़ों को चरण-स्पर्श और छोटों को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

कुश

19. दीपावली के पर्व पर अपने मित्र को शुभकामनाएँ देते हुए पत्र लिखिए–

कच्च रास्ता

जयपुर

दिनांक : 15 नवंबर, 20XX

प्रिय गौतम

सस्नेह नस्कार

दीपावली दीपों का यह पर्व तुम्हें व तुम्हारे परिवार के लिए मंगलमय हो। इस बार की दीपावली तुम सबके लिए खुशियों की बहार। मेरे और मेरे परिवार की ओर से दीपावली की अनंत शुभकामनाएँ।

तुम्हारा मित्र

अभिजीत

20. अपने मित्र के परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर उसे सांत्वना देते हुए और उसका हौसला बढ़ाते हुए पत्र लिखिए–

चाँदनी चौक

दिल्ली

दिनांक : 10 नवंबर, 20XX

प्रिय राहुल

सस्नेह नस्कार

कल मुझे मेरे बड़े भाई का खत मिला। पढ़कर बहुत तकलीफ़ हुई कि तुम इस बार अपनी प्रथम सत्र की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गए। इस बात की तो मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। राहुल तुम तो हम सब दोस्तों में ज्यादा होनहार माने जाते थे। पिछले साल तो तुमने 78 प्रतिक्षत अंक प्राप्त किए थे। हो सकता है कि परीक्षा के दिनों में तुम्हारे साथ कोई परेशानी हुई होगी। लेकिन मित्र अब भी देर नहीं हुई है। यदि तुम द्वितीय सत्र की परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर लोगे तो तुम्हें दसवीं कक्षा में जाने से कोई रोक नहीं पाएगा। इसलिए जो हुआ उसको भूलकर आगे बढ़ो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम अपने दृढ़-निश्चय व संकल्प द्वारा दोबारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ रहोगे। आशा करता हूँ कि मुझे अगले पत्र में शुभ समाचार से अवगत करोगे।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

अमन

21. अपनी वायुयान यात्रा के आनंद का वर्णन करते हुए अपनी सखी को पत्र लिखिए–

नई दिल्ली

दिनांक : 22 अगस्त, 20XX

प्रिय अनुराधा

सप्रेम नमस्कार

आशा है तुम सकुशल एवं आनंदपूर्वक होगे। मैं यहाँ अपने परिवारजनों सहित कुशलपूर्वक

हूँ। हमलोग दो दिन पहले ही नैनीताल, काठमांडू की यात्रा कर वापस आए हैं। इस बार हमारी यात्रा ज्यादातर वायुयान द्वारा हुई। बहुत ही आनंदपूर्वक हम सब की यात्रा संपन्न हुई। वायुयान की यात्रा इससे पहले हमने कभी नहीं की थी। कितनी सुरक्षा का ध्यान रखा जाता है वहाँ। पहले जब भी वायुयान अपने घर की ऊपर से जाता था तो मैं आसमान को देखते रह जाता और बार-बार यही सोचता वायुयान यात्रा कैसा होता होगा। काश, मैं भी पक्षी होता तो ऊँचे आसमानों में बादलों के बीच घूमता ही रहता। इस वीच वायुयान की यात्रा कर आसमान में बादलों के बीच से गुजरता हुआ अपना यान इतना मनमोहक लग रहा था। मैंने काफी तस्वीरें भी यान का बादलों के बीच से गुजरते वक्त का लिया है। यान में सुरक्षा निर्देश की जानकारी भी लगातार दी जा रही थी। स्वादिष्ट भोजन भी यान में उपलब्ध थे। आज साइंस ने कितनी तरक्की कर ली है। दूर देशों की यात्रा बस हम कुछ ही घंटों में कर सकते हैं। मुझे यह वायुयान की पहली यात्रा सदैव अविस्मरणीय रहेगी।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
रोहन

22. अपने विद्यालय की विशेषताएँ बताते हुए अपने मित्र अपनी सखी को पत्र लिखिए–

दिल्ली
दिनांक : 10 अगस्त, 20xx
प्रिय मित्र आशीष
सप्रेम नमस्कार

इन दिनों मैं काफी व्यस्त रहा, इसलिए समय पर पत्र नहीं लिख सका। आशा है तुम सभी सकुशल होगे। मेरे विद्यालय में अभी 'समावेशी शिक्षा' आरंभ की गई है, जिसमें शारीरिक एवं मानसिक रूप से असमर्थ बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने और सामान्य जीवन प्रदान करने के लिए सामान्य विद्यालय व सामान्य बच्चों के बीच ही शिक्षित करना, समावेशी शिक्षा का उद्देश्य है। सरकार द्वारा चलाई गई इस योजना में हमलोग भी उन बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। जिससे वे स्वयं को सामान्य वातावरण, सामान्य जीवन-शैली में ढाल सकें। हमलोगों के योगदान से उन बच्चों में सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं, जिससे मैं अत्यंत ही प्रसन्न हूँ। आज मुझे अपने विद्यालय प्रबंधन कार्यकर्ताओं, अध्यापकों एवं सहपाठियों पर गर्व महसूस होता है। तुम्हारी इच्छा भी मेरे विद्यालय में आने की थी। दाखिला फॉर्म मिलना आरंभ हो रहा है। तुम जल्द-से-जल्द फॉर्म भरकर मेरे विद्यालय में आ जाओ। तुम्हें यहाँ के कार्य कुशलता का परिचय यहाँ आने के बाद ही मिलेगा। मैं और मेरे माता-पिता इस विद्यालय के कार्य-पद्धति से अत्यधिक प्रसन्न है। अतिशीघ्र मिलने की उम्मीद के साथ।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
वरुण

23. होली का त्योहार रासायनिक व गंदे पदार्थों के बिना मनाने का निवेदन करते हुए मित्र को पत्र लिखिए–

कोटा, राजस्थान
दिनांक : 8 फरवरी, 20xx
प्रिय मित्र विनय
सप्रेम नमस्कार

इस बार फिर से होली के नज़दीक ही मेरी परीक्षा है। मैं इस बार भी होली का त्योहार मनाने वहाँ नहीं आ पाऊँगा। वैसे भी होली का त्योहार मुझे रंगों के रासायनिक पदार्थों के प्रयोग के कारण पसंद नहीं है। पापा बताते हैं, पहले की होली प्राकृतिक हुआ

करती थी, जो हमारे लिए नुकसानदायक नहीं हुआ करता था। त्वचा पर केमिकलयुक्त रंगों का नुकसान काफी ज्यादा होता है। इन हानिकारक रंगों से आँखों में जलन, खुजली व पानी आने लगता है। आँखें लाल हो जाती हैं। तुम भी सावधानी से होली का त्योहार मनाना और केमिकल युक्त रंगों का प्रयोग बिल्कुल भी नहीं करना। होली में माँ के हाथों के बने पकवान की बहुत याद आएगी। माँ के हाथ के खाना की तुलना संसार के किसी पकवान से नहीं की जा सकती है। मेरी ओर से तुम सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा करता हूँ, अगले वर्ष मैं भी तुम सभी के साथ रहूँगा। मेरी तरफ से बड़ों को चरण-स्पर्श और छोटों को शुभ प्यार कहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
पंकज

24. इंटरनेट की आवश्यकता बताते हुए पिता को पत्र लिखकर एक लैपटॉप खरीदने का आग्रह कीजिए—

आगरा
दिनांक : 3 जनवरी, 20XX
पूज्यवर पिता जी
चरण स्पर्श

मैं कुशल हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी सकुशल होंगे। मैं आज पत्र एक खास मकसद से लिख रहा हूँ। उम्मीद है, आप मेरी बात समझेंगे। पिता जी कॉलेज में सबके पास लैपटॉप है तथा इंटरनेट की सुविधाएँ भी हैं, जिससे वे अपना कार्य आसानी से घर बैठे कर लेते हैं। आज इंटरनेट प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की जरूरत-सी बन गई है। आज इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा की हर वह साधन उपलब्ध है, जिसकी आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति व विद्यार्थी को पड़ती है। इंटरनेट के द्वारा घर बैठे फॉर्म भरना, परीक्षा परिणाम देखना, रोज़गार संबंधी जानकारी और कई ऐसी किताबें जो आज बाज़ार में उपलब्ध नहीं हो पातीं, वह सभी इंटरनेट पर उपलब्ध होता है, जिससे विद्यार्थी का समय और पैसे दोनों की ही बचत होती है। मैं अभी अपना कार्य अपने मित्रों की सहायता से कर पाता हूँ, जिनके पास लैपटॉप पर इंटरनेट की सुविधाएँ मौजूद हैं। आशा करता हूँ कि पिता जी आप मेरी मज़बूरी समझेंगे और मेरी सहायता अवश्य करेंगे।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
श्लोक

03 चित्र-वर्णन
(Picture Description)

1. यह प्रातःकाल का चित्र है। माँ अपनी पुत्री के साथ मंदिर जा रही है। प्रातः काल का दृश्य मनोहर है। चारों ओर हरियाली छाई है। माँ के हाथ में फल और पूजा की अन्य सामग्रियों से सजी थाली है। मंदिर के ऊपर ध्वज लहरा रहा है। माँ के साथ पुत्री मंदिर जाने के लिए उत्साहित है। मंदिर जाने से और भगवान का ध्यान करने से हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इसलिए हमें प्रतिदिन मंदिर जाना चाहिए।
2. यह एक कक्षा का चित्र है। अध्याक बच्चो को हिंदी विषय के बारे में पढ़ा रहे हैं।

कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या चार है। अध्यापक के बाथ में एक किताब है, जिसके माध्यम से वह बच्चो से प्रश्न कर रहे हैं। सभी विद्यार्थी उनकी बातों को ध्यान से सुन रहे हैं और समझकर उनके प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयत्न कर रहे हैं।

3. इस चित्र में कुछ चरवाहे विभिन्न प्रकार के जानवरों के साथ नजर आ रहे हैं। चित्र में गाय, बकरी, ऊँट, भेड़ों के साथ हाथ में लाठी लिए कुछ लोग हैं। उनके साथ एक बालक है, जिसकी पीछे एक स्त्री सिर पर सामान की गठरी उठाए चल रही है। चित्र में दिखाई दे रहे सभी चरवाहे अपने जानवरों को चराने के लिए जंगल की ओर लेकर जाते हुए प्रतीत हो रहे हैं।

4. यह चित्र एक विद्यालय के बगीचे का है। इस चित्र में पौधारोपण के प्रति जागरूकता दिखाई गई है। सभी छात्र उत्साहपूर्वक पौधों को लगा रहे हैं। एक छात्र नन्हे पौधे को पानी दे रहा है, जबकि अन्य छात्र और छात्राएँ मिट्टी को खोदकर उसमें नए पौधे लगा रहे हैं। इन सभी छात्रों को पौधारोपण करते देख अध्यापिका खुद को गौरान्वित महसूस कर रही है।

5. यह चित्र किसी आश्रम या गुरुकुल का है। इस चित्र में गुरु अपने शिष्यों को धर्नुविद्या का ज्ञान दे रहे हैं। एक शिष्य ने वृक्ष में लटकती चिड़िया की आँख में सही निशाना मारा है। इस कारण गुरु उसे प्रसन्न होकर आशीर्वाद दे रहे हैं। अन्य शिष्य यह सब प्रसन्न भाव से देख रहे हैं।

6. छात्र स्वयं करें

7 छात्र स्वयं करें

8 छात्र स्वयं करें

9 छात्र स्वयं करें

10 छात्र स्वयं करें

11 छात्र स्वयं करें

12 छात्र स्वयं करें

04 संवाद-लेखन
(Dialogue Writing)

(अभ्यास-उत्तर)

1. शिक्षक : आदित्य, तुम रोज़ स्कूल से इतनी छुट्टी क्यों करते हो?

विद्यार्थी : सर, स्कूल आने का मेरा मन नहीं करता है।

शिक्षक : आदित्य क्या हुआ, विद्यालय आने का तुम्हारा मन क्यों नहीं करता है?

विद्यार्थी : मेरे दोस्त ने स्कूल बदल लिया है, किसी और स्कूल में दाखिला ले लिया है इसलिए मेरा मन नहीं लगता है।

शिक्षक : यह क्या बात हुई। इस तरह नहीं करते, तुम्हें अपना देखना है और अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान देना है। दोस्त तो और भी बन जाएँगे।

विद्यार्थी : हाँ जी सर।

शिक्षक : अभी तो पढ़ाई का समय है। इसे खराब मत करो, वरना पूरी उम्र रोना पड़ेगा। पढ़ाई हमारे लिए बहुत ज़रूरी है।

विद्यार्थी : सर मैं समझ गया। अब मैं रोज़ स्कूल आऊँगा और मन लगाकर पढ़ाई करूँगा।

शिक्षक : ठीक है। मैं तुम्हें एक मौका और दे रहा हूँ।

विद्यार्थी : धन्यवाद सर!

2. अशोक : मुझे बहुत गंदा लग रहा है।

सुवीर : क्यों क्या हुआ?

अशोक : देख रहे हो, हमारे मोहल्ले में कितनी गंदगी फैली हुई है, पर कोई साफ़ नहीं करता या इसकी शिकायत सफ़ाई विभाग के अधिकारियों से भी नहीं करता।

सुवीर : चलो हम दोनों मिलकर आज सफ़ाई करेंगे और इसकी शिकायत भी अधिकारियों से करेंगे। उम्मीद है इससे सभी लोग हमसे प्रेरित होकर अच्छा काम करेंगे।

अशोक : अच्छा सुवीर, अब चलो साफ़-सफ़ाई शुरू करते हैं।

3. छात्र स्वयं करें।
4. छात्र स्वयं करें।
5. छात्र स्वयं करें।
6. छात्र स्वयं करें।
7. छात्र स्वयं करें।
8. छात्र स्वयं करें।
9. छात्र स्वयं करें।
10. छात्र स्वयं करें।
11. छात्र स्वयं करें।
12. छात्र स्वयं करें।
13. छात्र स्वयं करें।
14. छात्र स्वयं करें।
15. छात्र स्वयं करें।
16. छात्र स्वयं करें।
17. छात्र स्वयं करें।
18. छात्र स्वयं करें।
19. छात्र स्वयं करें।
20. छात्र स्वयं करें।
21. छात्र स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

(खंड-क)

1. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iv)
(घ) (iii) (ङ) (iv)

2. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iv)
(घ) (iii) (ङ) (iii)

(खंड-ख)

3. (क) 1. शब्द भाषा की एक स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है।
2. यह एक निश्चित अर्थ का बोध कराती है।

(ख) मैं

4. संतुलन, आँखें

5. (क)

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
प्रसाधन	प्र	साधन
दुर्गम	दुर्	गम

(ख)

शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
नौकरी	नौकर	ई
हिचकिचाहट	हिचकिच	आहट

6. (क) (i) वनौषद (ii) भावुक
(ख) (i) अति + आचार (ii) परम+अर्थ

7. (क) अरे! जरा ठहरो, मेरी ओर देखो।
(ख) बह बूढ़ा किसका है, अब तो उसे निकाल देना चाहिए।

8. (क) विधानवाचक वाक्य
(ख) संदेहवाचक वाक्य

(खंड-ग)

9. (क) पर्यावरण प्रदूषण

'पर्यावरण' का शाब्दिक अर्थ है—हमारे चारों ओर का प्राकृतिक आवरण। जो कुछ भी हमारे चारों ओर विद्यमान है, हमें ढके-लपेटे हुए है, उसे पर्यावरण कहते हैं। प्रकृति ने मानव के लिए एक स्वच्छ एवं सुखद आवरण बनाया है, किंतु मानव ने अपने स्वार्थ में एक ओर प्रकृति की सुविधाओं का अंधाधुंध लाभ उठाकर उसका शोषण किया है, तो दूसरी ओर प्रगति के नाम पर शोर-गुल, धुआँ, ज़हरीली गैसें वायुमंडल में भर दी हैं। यही नहीं, नदियों के जल को भी दूषित कर विषाक्त बना दिया है। वायु हमारे प्राणों का आधार है। पर इसमें हमने धूल, ध ुआँ, राख, कालिख जैसे पदार्थ मिला दिए हैं। इनसे वायु-प्रदूषण बढ़ रहा है। वृक्ष लगाकर इस खतरे से बचा जा सकता है। जल-प्रदूषण के कारण पेयजल का भारी अभाव हो गया है। इनके अतिरिक्त बढ़ता हुआ शोर ध्वनि-प्रदूषण को जन्म दे रहा है। इससे श्रवण शक्ति पर तो प्रभाव पड़ ही रहा है, साथ ही सिरदर्द, रक्तचाप और अनिद्रा जैसे रोग भी बढ़ रहे हैं। हमें प्रकृति के स्वरूप की रक्षा के प्रति सचेष्ट होना होगा।

(ख) अशिक्षा : एक कलंक

जीवन की सफलता के लिए शिक्षा का होना बहुत आवश्यक है। अशिक्षित व्यक्ति निरा पशु समान होता है। शिक्षा के अभाव में जीवन सूना रहता है। भारत में अभी भी शिक्षित लोगों का प्रतिशत का.फी कम है। केरल सर्वाधिक साक्षर प्रदेश है। यही कारण है कि वहाँ के लोग बहुत जागरूक हैं। अशिक्षा हमें जागरूकता और ज्ञान से दूर रखती है। किसी भी देश के नागरिकों के शिक्षित होने पर ही उस देश की तरक्की की उम्मीद की जा सकती है। अशिक्षा देश की तरक्की में बाधक है। भारत की आधी जनसंख्या की अशिक्षा ही भारत को एक उन्नत राष्ट्र बनाने की लक्ष्य प्राप्ति में बाधक बन रही है। भारत सरकार ने 'शिक्षा का अधिकार' कानून बनाकर सभी को शिक्षा पाने का अवसर प्रदान किया है।

हमें इसका भरपूर लाभ उठाना चाहिए। शिक्षा ही हमारा, समाज का तथा देश का उद्धार करेगी। शिक्षा हमारे मन-मस्तिष्क के द्वार खोलती है। 'सर्वशिक्षा अभियान' इसी दिशा में एक प्रभावी कदम है। हमें इसे सफल बनाना होगा।

(ग) बढ़ता आतंकवाद

आतंकवाद आज विश्व के समक्ष उपस्थित गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह लोकतंत्र के विरुद्ध युद्ध और मानवता के विरुद्ध अपराध है। यह क्रूतापूर्ण नरसंहार का एक नया रूप है जो राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता और अंतर्राष्ट्रीय कानून के लिए खतरा है। आतंकवाद एक प्रकार से इक्कीसवीं सदी में मानवता के लिए नइ चुनौती है। आतंकवाद मानव जाति के विरुद्ध कुछ सिरफिरों की हिंसा है। आतंकवादी क्रूर, हृदयहीन और विवेकशून्य अपराधी हैं। वे बिना अपराध-बोध के खून-खराबा और अपराध करते हैं। प्राय: सभी आतंकवादी किसी न किसी प्रशंसनीय उद्देश्य का दावा करते हैं, जिनके लिए संवैधानिक माध्यम प्रभावकारी नहीं होते। आतंकवादी सरकार को हतोत्साहित कर अंतत: जवाबी हिंसा के लिए विवश कर देते हैं। आतंकवादी एक व्यक्ति को मारकर दस व्यक्तियों को डराना चाहते हैं। पिछले कुछ दशकों से भारत आतंकवादी गतिविधियों से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में जम्मू-कश्मीर में सीमा-पार आतंकवाद में वृद्धि हुई है। अब इनका निशाना देश भर के प्रमुख नगर और प्रमुख संस्थान हैं। हमें आतंकवाद से सख्ती से निपटना होगा।

10. बड़े भाई के विवाह में शामिल होने के लिए अपने मित्र को निमंत्रण-पत्र लिखिए।

साकेत

नई दिल्ली

10 नवंबर, 20XX

प्रिय अंकित

सस्नेह नमस्कार

तुम्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि इस महीने की 4 तारीख को मेरे बड़े भाई की सगाई हो गई। विवाह इसी महीने की 28 तारीख को होना निश्चित हुआ है। पिता जी की ओर से तो तुम्हें शादी का कार्ड समय पर मिल ही जाएगा। मैं व्यक्तिगत रूप से इतने दिन पहले तुम्हें निमंत्रित कर रहा हूँ, ताकि तुम अपना कार्यक्रम निश्चित कर सको। बरात यहाँ से 28 नवंबर की सुबह चंडीगढ़ के लिए रवाना होगी। 30 नवंबर को हमारे घर पर प्रीतिभोज है। तुम एक दो दिन पहले ही आ जाना, ताकि हम दोनों मिलकर शादी की तैयारी कर सकें। मैंने अन्य सभी मित्रों को भी निमंत्रित किया है। आशा है, इस अवसर पर हम सब मित्र फिर एक साथ मिलकर खुशी मना सकेंगे। यदि चाचा जी और चाची जी भी विवाह में सम्मिलित हो सकें तो हमें अत्यंत प्रसन्नता होगी। उन्हें मेरा सादर प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र

क॰ख॰ग॰

11. यह एक कक्षा का चित्र है। अध्यापक बच्चो को हिंदी विषय के बारे में पढ़ा रहे हैं। कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या चार है। अध्यापक के बाध में एक किताब है, जिसके माध्यम से वह बच्चों से प्रश्न कर रहे हैं। सभी विद्यार्थी उनकी बातों को ध्यान से रहे हैं और समझकर उनके प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयत्न कर रहे हैं।

12. छात्र स्वयं करें।

(अथवा)

देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर दो नागरिकों के मध्य संवाद।

रवि – मित्र पवन! कहाँ से चले आ रहे हो?

पवन – अरे, क्या बताऊँ? बिजली बोर्ड के दफ़्तर से आ रहा हूँ।

रवि – क्यों, क्या बात हो गई?

पवन – बात तो कुछ नहीं हुई। इस बार पाँच हज़ार रुपये का बिजली-बिल आया था, जबकि हर बार यह पाँच-छह सौ रुपये का होता था।

रवि – क्या उन्होंने बिल ठीक कर दिया?

पवन – पहले तो सुनते ही नहीं हैं और ज़्यादा कहो तो एक हज़ार रुपये रिश्वत माँगते हैं।

रवि – क्या रिश्वत देने के लिए हाँ कर आए हो?

पवन – क्या करूँ , कुछ समझ में नहीं आता। मन तो नहीं करता, पर कोई और उपाय भी नहीं सूझ रहा।

रवि – उपाय तो है। मैं बताता हूँ। इससे काम भी हो जाएगा और बिल-क्लर्क के होश भी ठिकाने आ जाएँगे।

पवन – मुझे बताओ, वह उपाय।

रवि – हम दोनों 'सतर्कता विभाग' में चलकर उसकी लिखित शिकायत कर देते हैं। वे उसे रँगे हाथों पकड़ लेंगे।

पवन – यही ठीक रहेगा। कभी-न-कभी तो हमें इस भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़ा होना ही होगा।

रवि – हाँ, यह ठीक रहेगा। चलो, वहीं चलें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–2

(खंड-क)

1. (क) समाज में यह बदलाव आया है कि बड़े-बुजुर्गों के प्रति मान-सम्मान में कमी आती जा रही है। संतान माता-पिता की आज्ञा का पालन करने में सकुचाने लगी है।

(ख) संतानें धूर्तता एवं स्वार्थ के वशीभूत होकर समाज में आए बदलाव को बढ़ावा दे रही है, जिसके कारण बड़ों के आदर्श, उनकी शिक्षाएँ ढ़ेर होती जा रही है।

(ग) समाज में आ रहे बदलाव का कारण पाशचात्य संस्कृत को अपनाना माना जा सकता है, जहाँ संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकल या एकाकी परिवार को अधिक महत्व दिया जाता है।

(घ) आज की संतानें माता-पिता को घर की रखवाली करने वाले चौकीदारों या घर का काम करने वाले नौकरों से ज्यादा कुछ नहीं समझती।

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है– '' बदलता समाज''

2. (क) पाठक कथा में रोचकता देखना चाहता है।

(ख) लेखक को कथाओं में सदैव घटनाओं की संभाव्यता के प्रति सचेत रहना चाहिए।

(ग) जग-जीवन में जो घटनाएँ घटित न हो सके, उनका वर्णन करना सबसे घातक है।

(घ) महत्वपूर्ण, मुख्य

(ङ) उपर्युक्त शीर्षक– 'रोचकता क्यों जरूरी'

(खंड-ख)

3. (क) पद (ख) पाँच
4. (क) (i) आशंका (ii) ऊँचाई
5. (क) निर्मल, आजन्म

   (ख) 'औपचारिक' में प्रयुक्त प्रत्यय– 'इक', 'हँसी' में प्रयुक्त प्रत्यय–'ई'
6. (क) (i) परमौदार्य (ii) वधूर्मि

   (ख) (i) प्रति + उपकार (ii) हित + ऐषी

   (ग) (i) दुर्जन (ii) निरपराधी
7. (क) देखो कौन आया है, उस कुरसी पर बैठाओ।

   (ख) बाबु हँस आप साधु हैं, आपका दुनियादारी समझ में नहीं आती?
8. (क) शायद वह कल यहाँ आए।

   (ख) अरे! जानवरों में गधे को सबसे बुद्धि मान माना जाता है।

(खंड-ग)

9. **(क) क्रिकेट और भारत**

भारत में क्रिकेट देश का सबसे लोकप्रिय खेल है। यह भारत में लगभग हर जगह खेला जाता है। भारतीय क्रिकेट टीम भारत की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम है। सन 1848 में भारत में पहले क्रिकेट क्लब की शुरुआत हुई थी। भारत में क्रिकेट खेल को राष्ट्रधर्म की तरह देखा जाता है। क्रिकेट की दुनिया में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका, इग्लैंड, आयरलैंड, न्यूजीलैंड, अफगानिस्तान, स्कॉटलैंड, वेस्ट-इंडीज, जिंबाव्वे आदि का प्रमुख नाम है। क्रिकेट का जितना जुनून भारत के साथ पड़ोसी देशों जैसे–पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका में देखा जाता है, शायद उतना दूसरे देशों में नहीं। यहाँ के लोग भी जुनून की हद तक क्रिकेट मैच देखते हैं। अपने देश के जीत की कामना भी मन से करते हैं। अपने देश के टीम के जीतने पर जिस प्रकार खिलाड़ियों को सर पर चढ़ाते हैं और हार के बाद उसी तरह का आक्रोश भी दिखाते हैं। लोगों का जितना रुझान प्रधानमंत्री के भाषण में भी नहीं होता उतना क्रिकेट में होता है। छोटे-छोटे बच्चे भी इस खेल के दिवाने हैं और वे इसे छोटी-सी खुली जगहों में भी इसे खेलते रहते हैं। खासतौर से सड़क और पार्क में। क्रिकेट ही नहीं बल्कि किसी भी प्रकार के खेल से स्वास्थ्य और उत्साह तो बढ़ता ही है साथ ही स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का भी विकास होता है। क्रिकेट के खेल से आपसी एकता तथा भाईचारा का भी विकास होता है। विश्व कप टूर्नामेंट के समय समूचा विश्व जैसे एक परिवार ही बन जाता है और यह क्रिकेट के खेल की एक बड़ी उपलब्धि है।

(ख) संयुक्त परिवार

एक 'संयुक्त परिवार' एक साथ रहता है। वह घर जिसमें भाई-बहन अपने माता-पिता और बच्चों के साथ रहते हैं। इसे 'संयुक्त परिवार' कहा जाता है। संयुक्त परिवार का अपना महत्व है। इसके कई फायदे हैं। इन सभी का मानना है कि एकता में बल है। संयुक्त परिवार में एकता के कारण वहां शक्ति एकत्रित होती है। कोई भी समस्या बिना हल किए किए वहां नहीं रहती है।

संयुक्त परिवार के सदस्य निर्भय हो जाते हैं। वे पड़ोस में हावी हैं। वहां पैसा भी बच जाता है। खर्च कम होता है। आमदनी ज्यादा होती है। बूढ़े और बच्चों को पूरी सेवा मिलती है। रोगी, अनाथ और विधवा महिलाओं को भी वहां पाला जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि झगड़े होते हैं। सदस्य आलसी हो जाते हैं। वे प्रगति नहीं कर सकते। वहां अशांति का साम्राज्य बना हुआ रहता है। लेकिन यह स्वीकार करना होगा कि यदि लोग प्रेम और एकता में रहते हैं, तो झगड़े समाप्त हो जाते हैं। पूरा परिवार आगे बढ़ता है। गरीबी दूर

होती है। जिन गाँवों में खेती होती है वहां संयुक्त परिवारों का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। बड़े ट्रेडों और व्यवसायों में भी संयुक्त परिवार लाभदायक हो सकते हैं। इसलिए संयुक्त परिवार की प्रथा को अपनाना चाहिए।

(ग) लड़का-लड़की एक समान

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो कि समाज में रहता है। इसके दो प्रकार पाई जाती हैं–लड़का और लड़की। समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए दोनों की ही समान रूप से भागीदारी जरूरी है। इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी है, लोगों की सोच में बदलाव। इतिहास गवाह है कि प्राचीन काल से ही लड़कियाँ अपनी शक्ति का परिचय देती आ रही हैं। वे किसी लड़के से कम नहीं हैं। लोगों की संकुचित सोच ने ही लड़कियों को लड़कों से पीछे समझा हुआ है। लड़कियाँ आज हर क्षेत्र में आगे हैं। वे घर-समाज व देश का नाम रौशन कर रही हैं। अगर परिवार को आगे चलाने के लिए लड़का जरूरी है तो परिवार को बढ़ाने के लिए लड़की। लड़कियों को समानता देने की शुरुआत घर से ही होनी चाहिए। उन्हें घर के हर निर्णय में भागीदारी देनी चाहिए। उन्हें लोगों के संकुचित सोच से लड़ने के लिए तैयार करना चाहिए कि वे लोगों की सोच को बदल सकें और लड़का-लड़की का भेद-भाव खत्म कर सकें। आज लड़का-लड़की में भेदभाव करना कानूनन अपराध माना जाता है। खुद भी इस अन्याय से बचें और समाज को भी मार्गदर्शन देना चाहिए। तभी लड़का-लड़की एक समान वाली क्रांति देश में आएगी और समाज सुरक्षित व स्वस्थ रह पाएगा।

10. ए-44, इंद्र विहार, लखनऊ

दिनांक : 22 अप्रैल, 20XX

आदरणीय भैया

सादर प्रणाम

सबसे पहले मैं आपको इस पुरस्कार प्राप्ति पर हार्दिक बधाई देता हूँ। आपने यह पुरस्कार पाकर परिवार के प्रत्येक सदस्य का सीना गर्व से चौड़ा कर दिया है। हम सभी को आपकी इस कामयावी पर नाज है। आपने जिस प्रकार से आरोह-अवरोह तथा उचित हाव-भाव आदि के साथ जो गायन प्रस्तुत किया वह निश्चय ही आपकी परिपक्वता का परिचायक है। परिवार में भी सभी आनंद और स्वस्थ हैं। आपके विषय में सुनकर सबको बहुत प्रसन्नता हुई और सबने गर्व महसूस किया। दादी तो कह रही थी कि हमें आशा है आगे भी यह इसी प्रकार सफलता प्राप्त करेगा। भैया, माँ ने आपको अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखने के लिए कहा है। शेष अगले पत्र में...

आपका भाई

आशुतोष

(अथवा)

विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहने तथा परीक्षा की तैयारी ठीक प्रकार से करते रहने की सलाह देते हुए अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

9 अगस्त, 20XX

प्रिय अनुज विवेक

सस्नेह आशीर्वाद

माँ का पत्र कल ही मुझे मिला है। उससे मुझे पता चला कि तुम्हारी परीक्षाएँ निकट आ रही हैं और तुम परीक्षा की तैयारी करने के लिए प्रायः विद्यालय में अनुपस्थित हो जाते हो। यह गलत बात है। यह सोच ही गलत है कि घर में बैठकर परीक्षा की तैयारी अधिक अच्छी तरह से कर सकते हो। तुम्हें यह करना चाहिए कि पहले टाइम-टेबल बना लो। प्रत्येक विषय को समान महत्व दो, फिर पढ़ना शुरू करो और साथ ही विद्यालय भी अवश्य जाओ। इस समय यदि अध्यापकों से संपर्क

बना रहेगा, तो परीक्षा की तैयारी के लिए उनका सहयोग तुम्हारे लिए लाभदायक ही सिद्ध होगा। माता जी और पिता जी से मेरा चरणस्पर्श कहना। नित्य विद्यालय जाना और कठिन परिश्रम करके परीक्षा में सफल होकर माता जी और पिता जी का सिर गर्व से ऊँचा करना।

तुम्हारा अग्रज

क०ख०ग०

11. यह चित्र एक विद्यालय के बगीचे का है। चित्र में स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता दिखाई गई है। दो छात्र हाथ में झाड़ू लेकर फैले कचरे को साफ कर रहे हैं। एक अन्य छात्र हाथ कचरे को एक झोले में डाल रहा है। वहीं सभी छात्रों के साथ खड़ी छात्रा भी हाथ में पेड़ से गिरे पत्ते उठाकर झोले में डाल रही है।

12. छात्र स्वयं करें